।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 127 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका दिसम्बर– 2018 30/–प्रति

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें।(अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

जोधपुर आश्रम–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का 93वाँ अवतरण दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। (24 नवम्बर 2018)

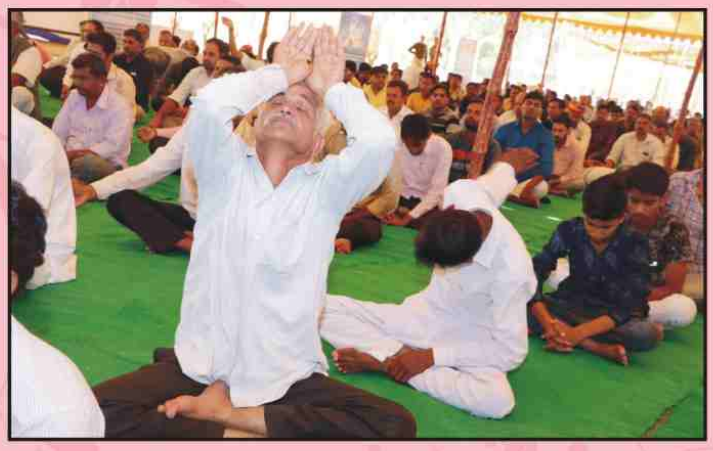

www.vskcomforter.org

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

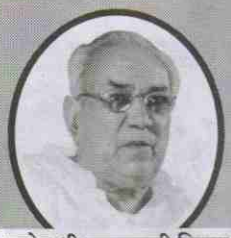

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

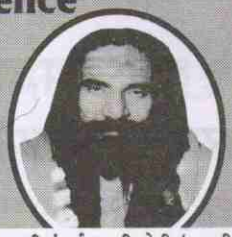

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 11 अंक : 127 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका दिसम्बर – 2018

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग
(ब्रह्मलीन)

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

अद्वितीय रहस्यवादी संत....4
गुरुदेव सियाग सिद्धयोग (सम्पादकीय)....5
सद्गुरुदेव का प्रवचन....6
अवतार की संभावना और हेतु....7
पुनर्जन्म और पूर्वाभास का....8
Religious Revolution in the World....9
शाश्वत–अविभाज्य सत्ता....10
हृदय मंथन....11
योग के बारे में....12
योग के आधार....13
योगियों की आत्मकथा....14
विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध....15
मनुष्य और विकास....16
मेरे गुरुदेव....17
अवतार पुरुषों की उक्तियाँ....18
चित्र पृष्ठ....19–23
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति....24–27
शेष पृष्ठ आठ का....27–31
दिव्य प्रेम....32
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....33
અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ....34
सिद्धयोग....35
संस्था के उद्देश्य....36
शेष पृष्ठ सम्पादकीय....37
ध्यान विधि....38

www.the-comforter.org

अद्वितीय रहस्यवादी संत

धर्म संघ बाहर से भीतर की ओर जाने का प्रयास करता है, जबकि रहस्यवादी भीतर से बाहर आता है।

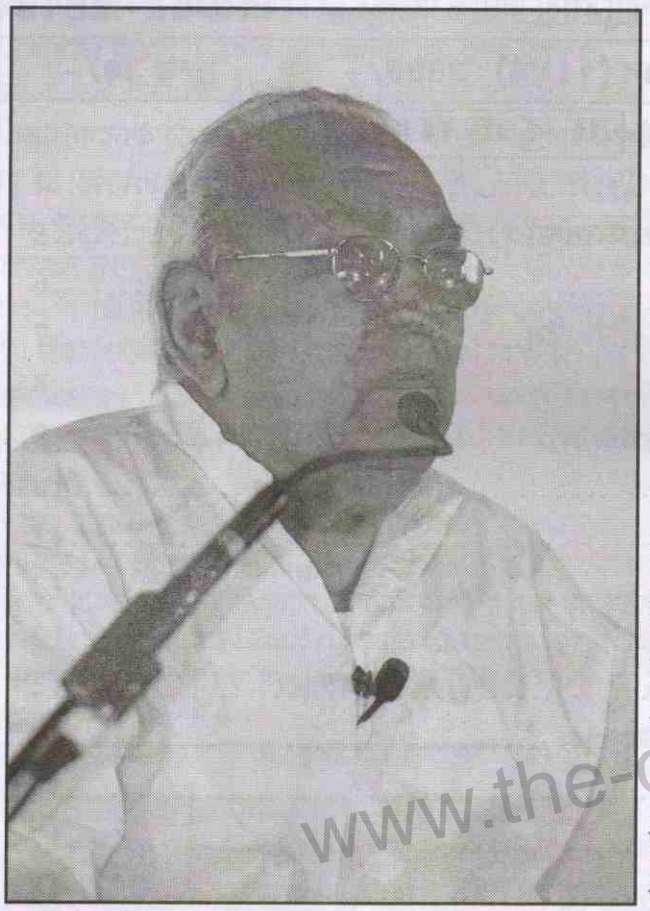

धार्मिक जगत् में दो प्रकार के लोग होते हैं-धर्मार्थी और रहस्यवादी। धर्मार्थी व्यक्ति पहले किसी धर्म संघ (सम्प्रदाय) में धार्मिक शिक्षा ग्रहण करता है, और तब उसका अभ्यास करता है। वह स्वयं के अनुभवों को अपने विश्वास का आधार नहीं बनाता। परन्तु रहस्यवादी साधक सत्य का अन्वेषण आरम्भ करता है। पहले उसकी प्रत्यक्षानुभूति करता है फिर अपने मत को सूत्रबद्ध करता है। धर्म संघ दूसरों के अनुभवों को अपनाता है, परन्तु रहस्यवादी का अनुभव अपना ही होता है। धर्म संघ बाहर से भीतर की ओर जाने का प्रयास करता है, जबकि रहस्यवादी भीतर से बाहर आता है।

www.the-comforter.org

"अपराविद्या" तो लिखी-पढ़ी जा सकती है, परन्तु "पराविद्या" अनिर्वाच्य विषय है। यह केवल प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय ही है। इस समय विश्व भर में धर्मार्थी लोगों का एक छत्र साम्राज्य है। हमारे देश में समय-समय पर रहस्यवादी संत प्रकट होते ही रहते हैं-श्री नानक देवजी, कबीर दासजी, रैदास जी, रामकृष्ण परमहंस आदि अनेक रहस्यवादी संत हो चुके हैं। मैं भी एक ऐसे ही रहस्यवादी संत का शिष्य हूँ। **"मेरे मुक्तिदाता ब्रह्मनिष्ठ संत सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी भी ऐसे ही अद्वितीय रहस्यवादी संत थे।"**

मेरे संत सद्गुरुदेव की असीम अहैतुकी कृपा के कारण ही, मेरे माध्यम से संसार के लोगों में यह अभूतपूर्व, अद्भुत परिवर्तन आ रहा है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

सम्पादकीय .....

"गुरुदेव सियाग सिद्धयोग"

संजीवनी मंत्र का जप और 15 मिनट ध्यान, करके देखें !

कल्कि अवतार, प्रवृतिमार्गी समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का 93 वाँ अवतरण दिवस, जोधपुर मुख्यालय, संस्था की सभी प्रामाणिक शाखाओं व देश-विदेश के लाखों साधकों ने श्रद्धा भाव से मनाया।

इस पावन पर्व की समस्त साधक गण और पाठक वृन्द को हार्दिक शुभकामनाएँ।

मनुष्य के क्रमिक विकास को उत्तरोत्तर नये और परम शिखर पर पहुँचाने के लिए, हर युग में परब्रह्म परमात्मा, भौतिक देह में अवतार ग्रहण कर, मनुष्य का चोला ओढकर, आसुरिक प्रवृतियों का नाश कर, मनुष्य के विकास का पथ प्रदर्शन करते हैं।

हिन्दू अवतारों की श्रृंखला अपने आप में मानो क्रम-विकास का रूपक हैं-सर्वप्रथम **'मत्स्यावतार'** हुआ, जिसके माध्यम से, जल में जीवों का सृष्टि विकास हुआ। दूसरा-फिर पृथ्वी पर थल व जल के स्थल-जलचर **'कच्छप'** का अवतरण हुआ। तीसरा-अवतार **'वाराह'** के साथ साथ पृथ्वी पर पशु-पक्षियों की सृष्टि हुई। चौथा-**'नृसिंह'** अवतार पशुओं व मनुष्यों के मध्य की स्थिति को स्पष्ट करता है। फिर पाँचवें-**'मनु'**, छठे-**'वामन'**, सातवें-**'परशुराम'**, आठवें-**'श्रीराम** और नवें-**श्री कृष्ण** आदि अवतरित हुए जो निरन्तर प्राणमय राजसिक से सात्विक, मानसिक, मानस और **अधिमानस** तक ले जाने के माध्यम बने।

दसवें अवतार समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने सिद्धयोग को मानव जाति में मूर्तरूप देकर, **''मानव से अतिमानव की ओर''** जाने वाले पथ पर मानव मात्र को अग्रसर किया है। इस पथ पर चलकर संपूर्ण मानव जाति दिव्य रूप में

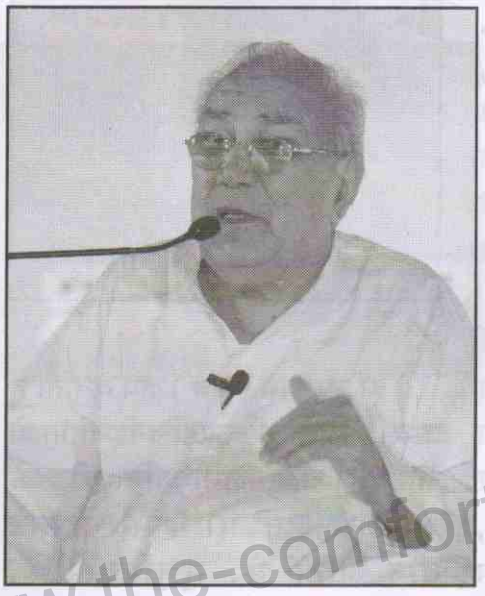

रूपान्तरित हो जाएगी।

(The Divine Transformation of Human Being.)

इस संबंध में महर्षि श्री अरविन्द ने कहा भी है-**''आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।''**

''गुरुदेव सियाग सिद्धयोग'', 'मंत्र-जप' व ''ध्यान'' पर आधारित एक अद्भुत योग है। यह योग(सिद्धयोग) नाथमत के योगियों की देन है। इसमें सभी प्रकार के योग जैसे-भक्तियोग, कर्मयोग, राजयोग, क्रियायोग, ज्ञानयोग, लययोग, भावयोग व हठयोग आदि सम्मिलित हैं। इसलिए इसे सिद्धयोग या महायोग भी कहते हैं।

सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण से साधक के त्रिविध ताप-आदिदैहिक या शारीरिक (Physical), आदि-भौतिक या मानसिक (Mental) व आदि-दैविक या दैविय (Spiritual) नष्ट हो जाते हैं तथा साधक जीवन मुक्त हो जाता है। **समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग सिद्धयोग को मानवजाति में मूर्तरूप दे रहे हैं।**

सद्गुरुदेव सियाग से दीक्षित साधकों को सघन मंत्र जप व नियमित ध्यान से भौतिक जीवन की सभी प्रकार की समस्याओं, शारीरिक व मानसिक रोगों तथा नशों से सहज में मुक्ति मिल जाती है। विद्यार्थियों की एकाग्रता और याद्दाश्त में अभूतपूर्व वृद्धि होती है। वर्तमान में भौतिक विज्ञान ने जितना विकास किया है, उससे आगे का विकास इस सिद्धयोग आराधना द्वारा किया जाना संभव है।

यदि विश्व के वैज्ञानिक, विश्व-शांति और विश्व ब्रह्माण्ड की असंख्य समस्याओं व अनसूलझी पहेलियों को हल करना चाहे तो ध्यान और समाधि अवस्था में, संबंधित

शेष पृष्ठ 37 पर...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

आज के संसार के लोग ध्यान पर बहुत जोर दे रहे हैं। उनकी भौतिक साइंस ने मान लिया है कि **औषधि** से जो परिवर्तन आता है, उससे कहीं अधिक ध्यान से आता है; **अगर ध्यान स्थिर हो जाए, स्थिर नहीं हो रहा है।** बौद्ध और जैन धर्म में ध्यान का बहुत महत्त्व है; मगर वो ध्यान से आगे नहीं बढते हैं। ध्यान तो **समाधि** की पहली स्टेज (अवस्था) है।

देखिये ! पातंजलि ऋषि ने जब योग की बात शुरू की तो योग के आठ अंगों का अनुष्ठान बताया है। **उसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।** इन आठ अंगों का अनुष्ठान करना पड़ता है। पहले पाँच तो ठोस है; **आखिरी तीन जो है-धारणा, ध्यान और समाधि-ये** सूक्ष्म अंग हैं।

जब तक धारणा पक्की नहीं होगी, ध्यान नहीं लगेगा। कल्पना से कभी ध्यान नहीं लगेगा और धारणा पक्की तब होगी, जब आपके अन्दर कुछ क्रियात्मक बदलाव आएगा, समस्याओं का प्रेक्टिकली भौतिक रूप से समाधान होगा तो महसूस होगा कि कोई न कोई गड़बड़ है, सही तो है।

ये परिवर्तन क्यों आ रहा है ? तो धारणा पक्की हो जाएगी। **धारणा पक्की हो जाएगी तो ध्यान स्थिर होना शुरू हो जाएगा** इसलिए मन को रोकने की कोशिश की जाती है। और **'ध्यान ही जब गहरा हो जाता है उसी का नाम समाधि है।'** समाधि के दो स्वरूप है-पहले **सबीज** समाधि फिर **निर्बीज** समाधि। सबीज समाधि में तो मनुष्य में **जीवभाव** और **आत्मभाव** दोनों रहते हैं, इसलिए बाहर की आवाजें सुनाई देती हैं और **सहस्रार** में, निर्बीज में पहुँच जाओ फिर मात्र आत्मभाव ही शेष रह जाता है **फिर आपके अलावा कोई है ही नहीं,** फिर आवाज सुनाई नहीं देती तो ये एक स्टेजेज (अवस्था) है **योग**

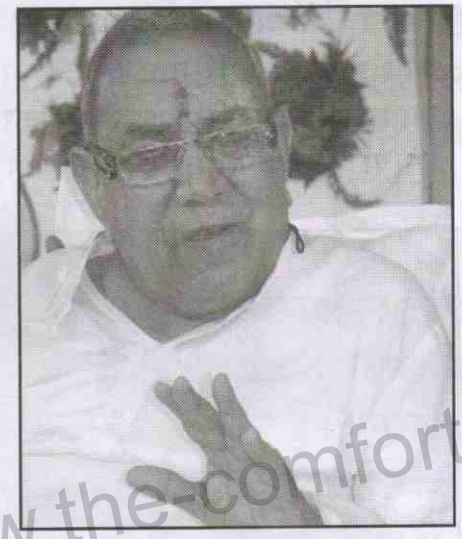

की।

मैं जो नाम (मंत्र) जप बताता हूँ उससे साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। **कुण्डलिनी शक्ति रीढ़ के आखिरी-आखिरी हिस्से में साढे तीन आंटों में, सुषुप्ति में है, अचेतन अवस्था में रहती है। मनुष्य योनि में ही वो चेतन हो सकती है क्योंकि ये पूर्ण योनि है और सब जीव भोग के लिए आते हैं।** ये दोराहे पर खड़ा है। ये **उर्ध्वगमन** भी कर सकता है, **अधोगमन** भी कर सकता है। उत्थान और पतन के रास्ते पर मनुष्य है तो अपनी सारी शक्तियों को चेतन कर ले तो उर्ध्वगमन शुरू हो जाता है। अधोगमन में फिर वही चौरासी लाख वाला हिसाब आ जाता है तो मनुष्य योनि में ही वो जाग्रत हो सकती है। अब कई लोग कह देते हैं कि क्या पता लगेगा कुण्डलिनी जाग्रत हो गई है ? जब पता ही नहीं लगे तो सोई रहने दो ! क्यों इस झंझट में फंसते हो ?

आपको क्या; दुनिया को पता लगेगा कि ये क्या हो गया ? ये क्रियात्मक परिवर्तन है आश्चर्यजनक रिजल्ट (परिणाम) मिलेगा, सारे शारीरिक रोग खत्म हो जाएंगे, सारे मानसिक रोग खत्म हो जाएंगे, सभी नशों से सहज में मुक्ति हो जाएगी और ये जो परिवर्तन आएगा, वह ठोस फिलॉसफीकल ग्राउण्ड्स पर आएगा; दार्शनिक आधार पर आएगा, कल्पना पर नहीं आएगा। इसमें कल्पना की कोई गुँजाइस नहीं है।

हमारे धर्म में कल्पना करवाई जा रही है, मैं जानता हूँ, मगर रिजल्ट क्या है ?

अब दो प्रकार से ये योग चल रहा है-एक तो नाथ सम्प्रदाय के संन्यासी वो श्वांस पर जोर देते हैं, वो **हठयोगी** कहलाते हैं। श्वांस को अन्दर खींच कर रोक लेते हैं। जब तक श्वांस रुका रहता है तो मन स्थिर रहता है, मगर ज्यों ही श्वांस चला कि मन चलायमान हो जाता है, उन नाथों की पार नहीं पड़ रही है।

इसमें (सिद्धयोग में) 'गुरु', मन को रोकता है **''गुरु क्या है ?''** ये शरीर गुरु नहीं हो सकता, गुरु तो अजर-अमर है, अनादि-अनन्त है। ये (बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी) नाथजी थे उनकी कृपा हो गई, इसलिए ये परिवर्तन आ रहा है। गुरु तो वो थे मुझे तो आदेश है बाँटने का, बाँट रहा हूँ।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

अवतार की संभावना और हेतु

''कारण दिव्य जन्म के दो पहलू हैं; एक है अवतरण, मानव-जाति में भगवान् का जन्मग्रहण, मानव आकृति और प्रकृति में भगवान् का प्राकट्य, यही सनातन अवतार है; दूसरा है आरोहण, भगवान् के भाव में मनुष्य का जन्मग्रहण, भागवत प्रकृति और भागवत चैतन्य में उसका उत्थान (भभावमागताः), यह जीव का नवजन्म, द्वितीय जन्म है। भगवान् का अवतार लेना और धर्म का संस्थापन करना इसी नव-जन्म के लिए होता है।''

पर यहाँ हमें एक बात बड़ी सावधानी के साथ कह देना है कि अवतार का आना--जो मानवजाति के अन्दर भगवान् का परम रहस्य है--केवल धर्म का संस्थापन करने के लिए ही नहीं होता है क्योंकि धर्मसंस्थापन स्वयं कोई इतना बड़ा और पर्याप्त हेतु नहीं है, कोई ऐसा महान् लक्ष्य नहीं है जिसके लिये श्री कृष्ण को उतरकर आना पडे, धर्मसंस्थापन तो किसी और भी महान, परतर और भागवत संकल्पसिद्धि की एक सामान्य अवस्थामात्र है।

कारण दिव्य जन्म के दो पहलू हैं; एक है अवतरण, मानव-जाति में भगवान् का जन्मग्रहण, मानव आकृति और प्रकृति में भगवान् का प्राकट्य, यही **सनातन अवतार** है; दूसरा है **आरोहण**, भगवान् के भाव में मनुष्य का जन्मग्रहण, भागवत प्रकृति और भागवत चैतन्य में उसका उत्थान (भभावमागताः), यह जीव का नवजन्म, द्वितीय जन्म है। भगवान् का अवतार लेना और धर्म का संस्थापन करना इसी नव-जन्म के लिए होता है।

अवतार विषयक गीता सिद्धांत के इस द्विविध पहलू की ओर उन लोगों का ध्यान नहीं जाता जो गीता को सरसरी तौर पर पढ़ जाते हैं। और अधिकांश पाठक ऐसे ही होते हैं जो इस ग्रंथ की गंभीर शिक्षा की ओर न जाकर इसके ऊपरी अर्थ से ही संतुष्ट हो जाते हैं। और वे भाष्यकार भी, जो अपनी सांप्रदायिक चहारदीवारी के अन्दर बंद रहते हैं, इसको नहीं देख पाते। इसलिए **अवतार तत्त्व** सम्बन्धी गीता का जो सिद्धान्त है उसके सम्पूर्ण अर्थ को समझने के लिए अवतार के इस द्विविध पहलू को जान लेना आवश्यक है। इसके बिना अवतार की भावना एक मतविशेष भर, एक प्रचलित मूढ़ विश्वास भर रह जायेगी अथवा यह हो जायेगा कि ऐतिहासिक या पौराणिक अतिमानवों को कल्पना के जोर से या रहस्यमय तरीके से भगवान्

बना दिया जायेगा और यह भावना वह नहीं रह जायेगी जो गीता की शिक्षा है, **जो गंभीर दार्शनिक और धार्मिक सत्य है** और जो **''उत्तम रहस्य''** को प्राप्त कराने का एक आवश्यक अंग या **पदक्षेप** है।

यदि परमेश्वर-सत्ता में मनुष्य के आरोहण (प्रगति) की सहायता करना मनुष्य-रूप में परमेश्वर के अवतीर्ण होने का प्रकृत हेतु न हो तो धर्म के लिए भगवान् का अवतार लेना एक निरर्थक-सा व्यापार प्रतीत होगा; कारण धर्म, न्याय और सदाचार की रक्षा का कार्य तो भगवान् की सर्वशक्तिमत्ता अपने सामान्य साधनों के द्वारा अर्थात् महापुरुषों और महान् आंदोलनों के द्वारा तथा ऋषियों, राजाओं और धर्माचार्यों के द्वारा सदा कर ही सकती है, उसके लिए अवतार की कोई प्रकृत आवश्यकता नहीं। **''अवतार का आगमन मानव प्रकृति में भागवत प्रकृति को प्रकटाने के लिये होता है।''** कृष्ण की भगवत्ता को प्रकटाने के लिए, जिससे मानव-प्रकृति अपने सिद्धांत, विचार, अनुभव, कर्म और सत्ता को ईसा और कृष्ण के सांचे में ढालकर स्वयं भागवत प्रकृति में रूपांतरित हो जाय।

अवतार जो धर्म संस्थापित करते हैं उसका मुख्य हेतु भी यही होता है ;श्रीकृष्ण इस धर्म के तोरणद्वार बनकर स्थित होते हैं और अपने अन्दर से होकर ही वह मार्ग निर्माण करते हैं, जिसका अनुवर्तन करना मनुष्यों का धर्म होता है। यही कारण है कि प्रत्येक अवतार मनुष्यों के सामने अपना ही दृष्टांत रखते और अपने-आपको ही एकमात्र मार्ग और तोरणद्वार घोषित करते हैं; अपनी मानवता को ईश्वर की सत्ता के साथ एक बतलाते और यह भी प्रकट करते हैं कि मैं जो मानव पुत्र हूँ, वह और जिस ऊर्ध्वस्थित पिता से मैं अवतरित हुआ हूँ वह, दोनों एक ही हैं--मनुष्य-शरीर में जो श्रीकृष्ण हैं वे (मानुषीं तनुमाश्रितम्) और परमेश्वर तथा सर्वभूतों के सुहृत् जो श्रीकृष्ण हैं वे, ये दोनों उन्हीं भगवान् पुरुषोत्तम के ही प्रकाश हैं।

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित गीता प्रबंध पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

पुनर्जन्म और पूर्वाभास का सत्यापन सम्भव है।

अगर मनुष्य सच्चे अर्थों में अध्यात्मवादी है तो उसका सीधा सम्पर्क अपने ही शरीर स्थित आत्मा और परमात्मा तत्त्व से है। यह तत्त्व ही संसार के सर्वभूतों के कारण है। अतः भूत भविष्य का सभी सच्चा ज्ञान सम्भव है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है :- अध्याय 15 श्लोक 7 व 8 में-

ममैवंशो जीवलोके
जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि
प्रकृतिस्थानि कर्षति।। 7।।

इस देह में यह जीवात्मा मेरा सनातन अंश है, त्रिगुणमयी माया में स्थित हुई मन सहित पाँचों इन्द्रियों को आकर्षित करता है।

शरीरं यदवाप्नोति
यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति
वायुर्गन्धानिवाशयात्।। 8।।

वायु गन्ध के स्थान से गन्ध को जैसे (ग्रहण करे ले जाता है वैसे ही) देहादिकों का स्वामी जीवात्मा भी जिस पहले शरीर को त्यागता है, उससे इन मन सहित इन्द्रियों को ग्रहण करके फिर जिस शरीर को प्राप्त होता है, उसमें जाता है। उपर्युक्त से यह स्पष्ट होता है कि जीवात्मा का साक्षात्कार होने का अर्थ है परमात्मा का साक्षात्कार और प्रत्यक्षानुभूति हो गई। क्योंकि जीवात्मा परमात्मा का ही सनातन अंश है। अतः वह अमर है। उसने जितने भी शरीरों में वास किया है और आगे जितने शरीरों में वास करता हुआ संसार क्रम को निरन्तर गतिशील रखेगा, उसका ज्ञान सम्भव है। भगवान ने छठे अध्याय के 26वें श्लोक में कहा है :-

वेदाहं समतीतानि
वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि
मां तु वेद न कश्चन।। 8।।

''हे अर्जुन ! पूर्व में व्यतीत हुए और वर्तमान में स्थित तथा आगे होने

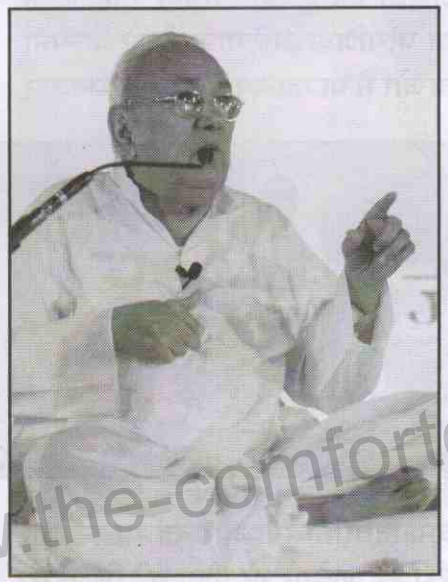

वाले सभी भूतों को, मैं जानता हूँ, परन्तु मुझको कोई भी नहीं जानता है।' इससे यह बात स्पष्ट होती है कि **ईश्वर तत्त्व को जानने वाला ही भूत और भविष्य को जान सकता है।** इस युग के सभी धर्माचार्यों ने युग के गुणधर्म के कारण अध्यात्म को केवल व्यवसाय के रूप में अपना रखा है।

धार्मिक ग्रन्थ कुछ बोलते हैं और वे अपनी चालाकी और तर्कबुद्धि के बल से लोगों को और ही कुछ समझा रहे हैं। क्योंकि इस समय का तथाकथित ज्ञान मनुष्य को कुछ परिणाम नहीं देता है, अतः संसार के लोगों का विश्वास धर्म गुरुओं से उठता जा रहा हैं। **क्योंकि धर्मगुरुओं ने इसे पेट से जोड़ लिया है,** अतः इसे चलाते रहना ही उनकी मजबूरी है। इस प्रकार की हठधर्मी वृत्तियों के कारण धर्म के विरुद्ध विद्रोह प्रारम्भ हो गये। भौतिक विज्ञान की उन्नति ने अध्यात्म गुरुओं की स्थिति और खराब कर दी। इस लिए अध्यात्म और भौतिक के रूप में एक ही तत्त्व विभाजित हो गया। दोनों दलों में भयंकर टकराव और दुर्भाव निरन्तर बढ़ता ही गया। क्योंकि भौतिक विज्ञान एक सच्चाई है,और सत्य, सत्य को आकर्षित करता है, इसलिए संसार के लोगों ने अध्यात्म को छोड़, भौतिक विज्ञान के सहारे सुख शान्ति की खोज प्रारम्भ कर दी।

मनुष्य शरीर की सभी प्रकार की सुख सुविधाएँ भौतिक विज्ञान ने उपलब्ध करा दी, परन्तु संसार के मानव को सुख और शान्ति फिर भी नहीं मिल सकी। ज्यों-ज्यों विज्ञान उन्नति करता गया, अशान्ति बढ़ती ही गई। आज जो वस्तुस्थिति संसार की है, उसने विज्ञानवेताओं को गहराई से सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। आज वैज्ञानिक दबी जुबान से यह स्वीकार करने लगे हैं कि ज्ञान प्राप्त करने के उसके भौतिक साधनों के अतिरिक्त अन्य साधन भी हैं।

यह एक शुभ संकेत है। **'सच्चाई पसन्द' और 'सच्चाई परख' लोग ही इस दिशा में तरक्की करके**

शेष पृष्ठ 28 पर...

www.the-comforter.org

Religious Revolution in the World

Since this kind of devotion is the prime qualification for receiving divine grace, the guru in this case is duty-bound to initiate the seeker making such a sankalpa.

The Mahabharata makes a mention of a rare case in which Eklavya, the legendary archer, got initiated into yoga by merely making a resolute plea before an inanimate idol that he had made in the likeness of his Guru Dronacharya to favor him with initiation. Eklavya's plea was so intensely sincere that Guru Dronacharya's cosmic conscious had to respond positively to it though he was not present there in person. Some yogic systems also treat this method as another form of meditation.

The Guru Siyag system combines divine word (mantra) and sankalpa (resolve) to initiate seekers into Siddha Yoga.

Importance of Mantra Japa

All the major religions in the world, despite their intrinsic mutual differences, hold a unanimous view that the entire universe with its animate and inanimate parts was created out of a divine word. "In the beginning was the word, and the word was with God, and the word was God.

The same was in the beginning with God. All things were made by Him, and without Him was not anything made that was made. In Him was life, and the life was the light of men," says the Bible.

The Hindu or Vedic religion is no exception to this concept of God being the divine word of our origin. It acknowledges Om as the sacred syllable — the divine sound out which God created this universe. Out of this divine word evolved variations of potent vibratory sounds capable of connecting with specific planes of cosmic consciousness on subtle level for which they were created. Each of these sacred vibratory sounds was called "Mantra" in the scripture as it originated from the Tantra, the technique of specific ways of pronouncing the divine word to achieve specific results.

The mantras therefore form the very basis of the Indian spiritual discipline. However, this knowledge is secret because of the great potency of each mantra to impact the physical as well as the spiritual world positively or negatively. Under the spiritual discipline, a mantra is potent only when it is given by a spiritual master to someone whom he has been accepted as a disciple.

The repetition of mantra, called Japa, results in full utilization of its potential. Mere reading of a mantra from the text would be an exercise in futility as the word would lack the divine vibratory sound which only a guru, well-versed in spirituality, can give. Even an illiterate person, lacking knowledge of scriptures or philosophy, can therefore experience full potential of a mantra if he receives it from the guru, and practices it under his guidance.

Count. to Next Edition...

www.the-comforter.org

शाश्वत-अविभाज्य सत्ता

उसी की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाने के लिए ही विश्व में निकला हूँ

''मैं तो मानव मात्र में, जो एक ही शाश्वत-अविभाज्य सत्ता कार्य कर रही है, उसी की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाने के लिए विश्व में निकला हूँ। आज विश्व में जितने भी धर्म, जिस स्वरूप में चल रहे हैं, मैं उस संकीर्ण दायरे में कैद होने को तैयार नहीं हूँ।

'मेरे मिशन का दार्शनिक ग्रंथ ''मनुष्य शरीर'' है।' मैं मात्र इसी ग्रंथ को पढ़ाना सिखाता हूँ। अतः जब तक यह ग्रंथ संसार में रहेगा, तब तक मेरा मिशन चलता ही रहेगा। मेरे रहने, न रहने से भी इस मिशन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि आज भी मैं हजारों शिष्यों को चेतन कर चुका हूँ।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

हृदय मंथन

आज, युग बड़ा भयानक युग है। **साधकों के लिए,** यह अत्यन्त ही कठिन है। जो साधक, जितना अधिक गंभीर तथा नियमबद्ध होता है उसे उतनी ही अधिक कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं। आज जिसका भी आदर करो, वही अपमान करने पर उतारू हो जाता है। जिससे **प्रेम** करो, उत्तर में वह **घृणा** करता है। जिसकी भी सहायता करते रहो, समय पड़ने पर वह धोखा दे जाता है।

स्वार्थ इतना अधिक प्रचारित है कि निजी लाभ के लिए किसी का गला काट देने में भी संकोच नहीं किया जाता। जो यह सब नहीं करता, उसे भी सहना तो पड़ता ही है। जगत् न कभी सुधरा है न सुधरेगा। बड़े-बड़े साधक भी युग-प्रभाव का सामना न कर पाने से अपना धैर्य खो बैठते हैं तथा विचलित हो जाते हैं। या तो युग के साथ चलना पड़ता है या उससे दुःखी होकर चित्त को विक्षिप्त कर लिया जाता है और या फिर उसे प्रसन्नतापूर्वक सहन कर चित्त को अप्रभावित भी रखा जा सकता है। **गंभीर साधक तीसरे उपाय को अपनाने में ही श्रेय मानते हैं।**

साधना का उपर्युक्त रहस्य, श्री गुरु महाराज की कृपा से समझ में आया। कितने ही समय से इन बातों को सुनते तथा पढ़ते चले आ रहे थे, किन्तु अभी तक कभी भी इधर पूरी तरह ध्यान नहीं दिया था, किन्तु यही एक ऐसा तथ्य है जिसके प्रति लापरवाह होकर साधक, साधक नहीं रह जाता तथा जिस पर लक्ष्य रखने से साधक को, उसकी साधना का फल मिलने लगता है। साधक का निश्चित एक मार्ग होता है। सब को प्रेम-आदर देना, मित्र-शत्रु का भाव हटाकर सबसे समान रूप से प्रेम करना, किसी के द्वारा कोई भूल हो जाय, उसे क्षमाकर देना, दुःखों-कष्टों को सहन करते हुए भी मन पर कोई प्रभाव नहीं लाना, यदि कोई बुरा भी करे तो भी उसके साथ अच्छा ही करना।

जगत् अच्छा है या बुरा, इसकी चिन्ता छोड़कर स्वयं अच्छा बनने के लिए प्रयत्न करना तथा इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, कुछ भी त्याग करने को तैयार रहना इत्यादि।

महाराजश्री के उपदेशों का सारांश इस प्रकार हैं-

(१) केवल आलती-पालती मार कर, तथा आँखें मूंद कर बैठने का नाम ही साधन नहीं है। जगत् से मन को तोड़ना तथा चैतन्य के साथ जोड़ने का प्रयत्न करते रहने की निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। इसके लिए साधन भी आवश्यक है तथा प्रति क्षण मन की गतिविधियों पर नजर रखना भी। **संस्कारों को क्षीण करना जितना कठिन है, उससे भी कहीं अधिक कठिन संस्कार संचय को रोकना है।**

(२) दीक्षा तो कई लोग लेते हैं, किन्तु समुचित साधन नहीं कर पाते। **गुरु तो कृपा करते हैं, किन्तु उससे लाभ उठाना शिष्य का काम है।** केवल दीक्षा ले लेने से ही कोई सिद्ध नहीं हो जाता। जीव के अंदर इतनी मलिनता भरी है कि उसके लिए दीर्घकालीन साधन, गुरु के प्रति श्रद्धा, कर्म करते समय सेवा भाव तथा जाग्रत शक्ति के प्रति समर्पण भी आवश्यक है। **यह सब धीरज तथा उत्साह के बिना संभव नहीं।**

(३) चाहे साधन का समय हो, चाहे व्यवहार का, समर्पण, प्रेम तथा राग-द्वेष रहित वृत्ति सदैव बनी रहनी चाहिए। इसके लिए मन के सतत् निरीक्षण करते रहने की आवश्यकता है। एक क्षण के लिए भी यदि यह क्रम खण्डित हो जाये तो मन कोई न कोई उपद्रव खड़ा कर देता है। मन सदा, चंचल तथा अस्थिर होने से एक विषय या स्थान पर ठहरना नहीं चाहता। साधन-भजन करते समय वह और भी अधिक भागता है।

(४) समर्पण के भी पहले ईश्वर तथा गुरु में श्रद्धा का होना अनिवार्य है। जब श्रद्धा ही नहीं तो समर्पण कैसा तथा किसको? **समर्पण तथा सहन-शक्ति का घनिष्ठ संबंध है।** समर्पण तथा प्रेम भी एक दूसरे के आश्रित हैं। एक प्रेमी साधक ही समर्पण कर सकता है तथा समर्पणयुक्त साधक ही प्रेमी हो सकता है। किसी को कोई भी साधन क्यों न हो, प्रेम सबके लिए आवश्यक है।

(५) प्रेम एक ऐसा तत्त्व है जो साधन को निरन्तरता प्रदान कर सकता है। प्रेम भी ऐसा कि हृदय का सारा प्रेम केवल भगवान् के लिए ही हो, किसी प्रकार का विभाजन नहीं हो।

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज
'हृदय मंथन' पुस्तक से

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के बारे में

हम जो देखते हैं, उसे हमें भरसक अच्छी-से-अच्छी तरह कहना चाहिये लेकिन जो दूसरे देखते या कहते हैं उसके साथ झगड़ना नहीं चाहिये। बल्कि हमें स्वीकार लेना चाहिये और देखना चाहिये कि उन्होंने जो देखा और कहा है उसका स्थान हमारी पद्धति में कहाँ है। हमारा विवाद केवल उन्ही से हैं, जो दूसरों के अन्तर्दर्शन को मानने या उनके वक्तव्य को स्वाधीनता या मूल्य देने से इंकार करते हैं, उनसे नहीं जो केवल अपने **अन्तर्दर्शन** की बात कहके सन्तुष्ट हो जाते हैं।

धार्मिक या दार्शनिक सिद्धान्त विश्व में सत्ता के व्यवस्था का विवरण है। जो भगवान् ने हमारी वर्तमान सत्ता की स्थिति में, हम पर प्रकट किया है। वह इसलिये दिया गया है कि जब हम **प्रकृति** में कार्य करें तो मन के पास कोई ऐसी चीज रहे जिसका वह सहारा ले सके।

लेकिन यह जरूरी नहीं है कि इस व्यवस्था के बारे में हमारा अन्तर्दर्शन भी ठीक वही हो, जो औरों का है। विचार का वह रूप जो हमारी मानसिकता के अनुकूल हो। यह जरूरी नहीं है कि वह भिन्न प्रकार से गठित मानसिकता के भी अनुकूल हो। अपने ही सिद्धान्त पर मतांधता के बिना दृढ़ता, अन्य सभी सिद्धान्तों या पद्धतियों के प्रति दुर्बलता के बिना **सहिष्णुता**-यह हमारा बौद्धिक दृष्टिकोण होना चाहिये।

तुम्हें ऐसे बहस करनेवाले मिलेंगे जो तुम्हारे सिद्धान्त पर इस कारण आपत्ति करेंगे कि वह इस या उस शास्त्र अथवा इस या उस आप्त पुरुष-चाहे वह दार्शनिक, सन्त या अवतार हो, के साथ मेल नहीं खाता। उस समय यह याद रखो कि केवल सिद्धि और अनुभूति का तात्विक महत्त्व है। सत्ता के बारे में शंकर ने क्या तर्क किया है अथवा विवेकानन्द ने बौद्धिक रूप में क्या कल्पना की है, यहाँ तक कि रामकृष्ण ने अपनी बहुसंख्यक और बहुविध सिद्धियों के आधार पर क्या कहा है? उसका तुम्हारे लिये वहीं तक मूल्य है, **जहाँ तक भगवान् ने तुम्हें उसे स्वीकार करने और अपनी अनुभूति में नया रूप देने की प्रेरणा दी हो।**

विचारकों, सन्तों और अवतारों के मतों को संकेतों के रूप में स्वीकार करना चाहिये, बेड़ियों के रूप में नहीं। तुम्हारे लिये महत्त्व उस चीज का है जो तुमने देखी है या जो तुम्हें भगवान् ने अपनी वैश्व वैयक्तिकता या निर्वैयक्तिकता में अथवा, व्यक्तिगत रूप से किसी शिक्षक, गुरु या पथ के **अन्वेषक** में योग मार्ग पर दिखलाना स्वीकार किया हो।

योग का विकासवादी लक्ष्य

कठोपनिषद् इस प्रकार के शक्तिशाली और सारगर्भित वचनों से गुंथा हुआ है, जिनमें शब्द के एक बिन्दु भर स्थान में अर्थ का **ब्रह्माण्ड** भरा है। इस तरह का एक काव्य है-''योगो ही प्रभवाप्ययौ।'' **योग ही वस्तुओं का आरम्भ और अन्त है।** पुराणों में इस वचन पर बल दिया है और उसे विकसित किया है। **भगवान् ने योग से सृष्टि की रचना की और अन्त में योग द्वारा ही वे उसे अपने अंदर खींच लेंगे।** लेकिन केवल विश्व की मौलिक रचना और उसका अन्तिम विलय नहीं बल्कि वस्तुओं के सभी महान् परिवर्तन, सृजन, विकास, विनाश भी योग की तात्विक प्रक्रिया तपस्या द्वारा संपादित होते हैं।

इस प्राचीन दृष्टि के अनुसार योग अपने-आपको स्वयं प्रकृति की सभी प्रक्रियाओं में प्रभावकारी और शायद तात्त्विक और वास्तविक कार्यकर्त्री गतिविधि के रूप में प्रस्तुत करता है।

अगर प्रकृति की सामान्य क्रियाओं में ऐसा है यानी समस्त शक्ति और सफलता का सच्चा कारण है भागवत ज्ञान और भागवत इच्छाका अपने-आपको वस्तुओं के सम्पर्क में रखाना तो यही बात मानव क्रिया-कलाप में भी ठीक होनी चाहिये? विशेष रूपसे यह बात मनोवैज्ञानिक अनुशासन की सभी सचेतन और स्वेच्छित प्रक्रियाओं के लिये भी ठीक होनी चाहिये। योग या योग पद्धतियां - जैसा कि हम कहते हैं -- वास्तवमें एक पूर्ण करनेवाली, आत्मसचेतन स्वाभाविक प्रक्रिया के अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकती, जिसका उद्देश्य है उन विषयों को तेजी से सफल करना जिन्हें साधारण प्राकृतिक क्रिया धीरे-धीरे मंथर गति से सैकड़ों बल्कि हजारों वर्षों के विकास में पूरा करती है।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

श्री अरविन्द

योग के आधार

श्रद्धा, अभीप्सा और आत्मसमर्पण

अवश्य ही यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि इसका फल तुरंत ही दिखायी देगा, क्योंकि निम्न प्रकृति की बाधा या विरोधी शक्तियों का आक्रमण कुछ समय तक, यहाँ तक कि दीर्घ काल तक, आवश्यक परिवर्तन को रोक सकने में सफलता प्राप्त कर सकता है।

ऐसी अवस्था में साधक को तब तक अपने प्रयास में लगे रहना चाहिये, अपने संकल्प को बराबर भगवान् के पक्ष में नियुक्त करते रहना चाहिये, त्याग करने योग्य वस्तुओं का त्याग करते रहना चाहिये, सत्य ज्योति और सत्य शक्ति की ओर अपने-आपको खोले रखना चाहिये और उनका स्थिरता और दृढ़ता के साथ, बिना थकावट के, बिना अवसाद या अधीरता के आह्वान करते रहना चाहिये, जब तक यह अनुभव न होने लगे कि भागवत शक्ति कार्य करने लगी है और बाधाएँ दूर होनी लगी हैं।

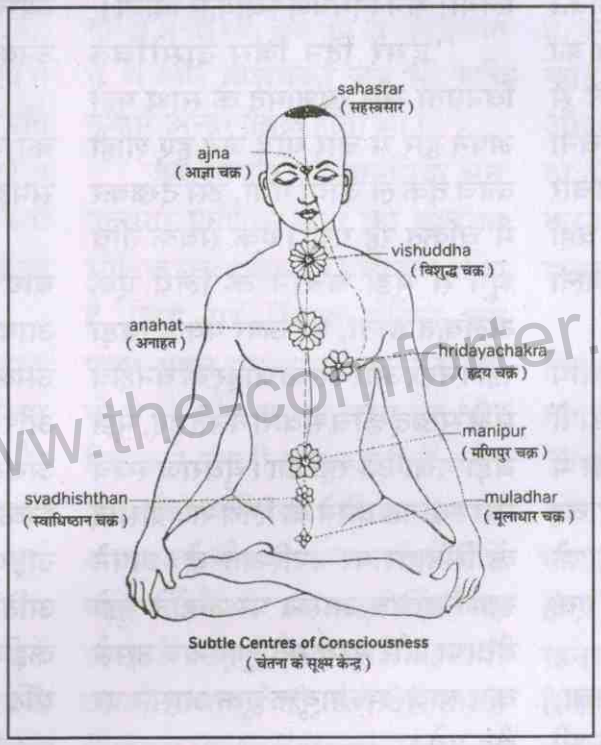

तुम कहते हो कि तुम अपने अज्ञान और अंधकार के विषय में सचेतन हो। पर, यदि यह केवल साधारण सचेतनता हो तो यह पर्याप्त नहीं है। अगर तुम पूरे ब्योरे के साथ, उनकी वास्तविक क्रियाओं में, उनके विषय में सचेतन होओ तो फिर आरंभ के लिये यह काफी है। तुम जिन भ्रांत क्रियाओं के विषय में सचेतन हो चुके हो, उनका तुम्हें दृढ़ता के साथ त्याग करना होगा और अपने मन और प्राण को भागवत शक्ति की क्रिया के लिये एक शांत और स्वच्छ क्षेत्र बना देना होगा।

जो वृत्तियाँ यंत्रवत् चलती रहती हैं, उनको मानसिक संकल्प के द्वारा बंद करना बराबर ही अधिक कठिन होता है, क्योंकि वे किसी युक्ति-तर्क या मानसिक समर्थन के ऊपर बिल्कुल ही निर्भर नहीं करतीं; बल्कि वे पारस्परिक संयोग या केवल यंत्रवत् क्रिया करने वाली स्मृति या अभ्यास के ऊपर अवलंबित होती हैं।

परित्याग का अभ्यास अंत में विजयी होता है, पर केवल व्यक्तिगत प्रयास के बल पर इसे करने से इसमें एक लंबा समय लग सकता है। अगर तुम यह अनुभव कर सको कि भागवत शक्ति तुम्हारे अंदर कार्य कर रही है तो फिर यह कार्य अधिक आसान हो जायेगा।

पथप्रदर्शिका दिव्य शक्ति को आत्मदान करने में तुम्हारे किसी भाग को जड़ता या तामसिकता नहीं दिखानी चाहिये और न तुम्हारे प्राण के किसी भाग को निम्नतर आवेग और वासना के सुझावों का त्याग न करने के लिये, इस आत्मदान की आड़ लेनी चाहिये।

❖❖❖

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

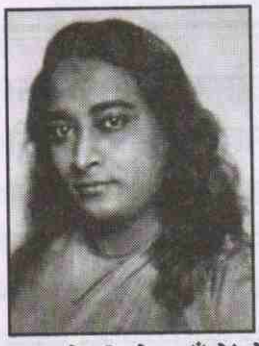

''उसका चेहरा तो देखो ! वह स्वयं बाघों के राजा का अवतार मालूम होता है।'

''तुम तो जानते ही हो, गाँवों के नटखट छोकरे किस प्रकार ताजा समाचार-पत्र का काम करते हैं ! और किस गति से महिलाओं की मौखिक जनसूचना प्रणाली इस घर से उस घर समाचार पहुँचाती है ! कुछ ही घंटों में मेरी वहाँ उपस्थिति से सारे शहर में खलबली मच गयी।

''संध्या के समय मैं चुपचाप आराम कर रहा था कि घोड़ों की टापों की ध्वनि सुनायी दी। मैं जिस घर में रुका था, उसी के सामने आकर वह ध्वनि रुक गयी। लम्बे कद के पगड़ीधारी पुलिस सिपाहियों का एक दल अन्दर घुस आया।

''मैं अवाक् रह गया। मैंने सोचा, 'इन पुलिसवालों के लिये कुछ भी संभव है। कहीं वे मेरे लिये पूर्णतया अगम्य किसी बात पर मेरी खिंचाई करने तो नहीं आये हैं ?' परन्तु उन्होंने अपने सामान्य व्यवहार के विपरीत अत्यंत विनय के साथ मेरा अभिवादन किया।

''आदरणीय महोदय ! कूचबिहार के युवराज की ओर से आपका स्वागत करने के लिये हमें भेजा गया है। उन्होंने कल प्रातःकाल आपको अपने राजप्रासाद(महल) में पधारने का आमंत्रण भेजा है।'

''मैं थोड़ी देर इस पर सोचता रहा। किसी अज्ञात कारण से अपनी इस शांत यात्रा में उपस्थित हुए, इस विघ्न से तीव्र उद्वेग की भावना, मेरे मन में उठ रही थी। परन्तु पुलिसवालों की **विनयशीलता** ने मेरे हृदय को छू लिया; मैंने निमंत्रण स्वीकार किया।

''दूसरे दिन जिस दासोचित विनम्रता और खुशामद के साथ मुझे अपने द्वार से चार घोड़े जुते हुए शाही कोच तक ले जाया गया, उसे देखकर मैं चकित रह गया। एक सेवक तीव्र धूप से मुझे बचाने के लिये एक **अलंकृत छाता**, मेरे ऊपर पकड़े खड़ा रहा। नगर और उसके बाहर के वनक्षेत्र में से सुखद कोच सवारी करते हुए, मुझे बड़ा मजा आ रहा था। युवराज स्वयं मेरा स्वागत करने के लिये राजप्रासाद के **सिंहद्वार** पर उपस्थित थे। अपने **स्वर्णखचित** आसन पर उन्होंने मुझे बैठाया और मुस्कराते हुए स्वयं उससे कम साज-सज्जायुक्त एक आसन पर बैठ गये।

'' 'यह सब विनम्र सेवा निश्चय ही मुझपर कोई मुसीबत लानेवाली है !' बढ़ते हुए आश्चर्य के साथ, मैं सोच रहा था। इधर-उधर की थोड़ी बातें करने के बाद युवराज का उद्देश्य प्रकट हो ही गया।

''मेरे नगर में अफवाह फैली हुई है कि आप केवल अपने नंगे हाथों से जंगली बाघों के साथ लड़ सकते हैं। क्या यह सच है ?''

'बिल्कुल सच है।'

'हमें इस पर विश्वास नहीं होता !' आप शहरी लोगों के पॉलिश किये हुए चावल पर पले, कोलकाता के बंगाली हैं। कृपया सच-सच बताइये, क्या आप केवल निर्बल, अफीम खिलाये गये बाघों से ही नहीं लड़ते रहे हैं ?' उनका स्वर उँचा और व्यंग्यभरा था। उनके बोलने के ढंग में उनके प्रांत की शैली की झलक थी।

''उनके उस अपमानजनक प्रश्न का उत्तर देना, मैंने आवश्यक नहीं समझा।

'हम, हाल ही में पकड़े गये अपने बाघ **'राजाबेगम'** के साथ लड़ने की आपको चुनौती देते हैं। यदि आप उसका सफलतापूर्वक सामना कर सके और उसे जंजीर से बाँधकर चेतन अवस्था में उसके पिंजरे से बाहर निकल सके, तो वह रॉयल बंगाल टाइगर आपका हो जायेगा। इसके अतिरिक्त सहस्रावधि रुपये एवं अन्य कई उपहार भी आपको मिलेंगे। और यदि आपने उससे लड़ना अस्वीकार कर दिया तो हम अपने पूरे राज्य में आपको पाखण्डी घोषित कर देंगे !'

''उनके उद्धत शब्द, गोलियों की बौछार के समान मुझे लग गये। मैंने गुस्से से उनकी शर्तें स्वीकार कर लीं। उत्तेजना में आसन से आधे उठ खड़े हुए युवराज निष्ठुर मुस्कान के साथ वापस बैठ गये। उनकी वह मुस्कान देखकर मुझे उन रोमन सम्राटों की याद आयी, जिन्हें ईसाइयों को हिंस्र पशुओं के साथ लड़ाने में आनन्द आता था।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध

आजकल लोग प्रत्येक वस्तु का कारण अपनी अज्ञानमयी बुद्धि में, अपने उपरितलीय अनुभव और बाह्य घटनाओं में खोजना चाहते हैं। वे लोग उन परोक्ष शक्तियों को और आन्तरिक कारणों को नहीं देखते, जो भारतीय यौगिक ज्ञान परंपरा में भलीभांति विदित और प्रत्यक्ष कर लिये गये थे।

निःसन्देह इन शक्तियों को अपना अवलम्ब बिन्दु स्वयं साधक में ही, उसकी चेतना के अज्ञान मय हिस्सों में और उनके सुझावों और प्रभावों के प्रति चेतना की स्वीकृति में ही प्राप्त होता है। अन्यथा वे क्रिया ही न कर सकती या कम-से-कम सफलता पूर्वक क्रिया न कर सकती।

तुम्हारे मामले में मुख्य अवलम्ब बिन्दु ये रहे हैं-निम्नतर प्राणिक अहंकार की **अत्यधिक संवेदनशीलता** और अब भौतिक चेतना भी जो अपनी सारी दृढ़ या स्थिर सम्मतियों, पक्षपातों, पूर्व निर्णयों, अभ्यासगत प्रतिक्रियाओं, व्यक्तिगत अभिरुचियों, पुराने विचारों और साहचर्यों के प्रति आसक्ति, अपनी हठीली शंकाओं को साथ लिये फिरती है और बृहत्तर प्रकाश का अवरोध और विरोध करने के लिये, एक दीवार के रूप में इन वस्तुओं को बनाये रखती हैं।

भौतिक मन की इस क्रिया को लोग बुद्धि एवं तर्क कहते हैं। यद्यपि यह एक ऐसी मशीन है जो केवल मानसिक अभ्यासों को चक्र में घूमाती रहती है और यह उस सच्ची और स्वतन्त्र तर्क बुद्धि, उच्चतर बुद्धि से बहुत भिन्न है जो कि आलोकित करने में समर्थ होती है, और उस उच्चतर **आध्यात्मिक प्रकाश** से अथवा चैत्य चेतना की उस **अन्तर्दृष्टि** और **कुशलता** से तो और भी अधिक भिन्न है जो तुरन्त यह देख लेती है कि कौनसी चीज सच्ची और यथार्थ है। और उसे उस चीज से पृथक् कर देती है जो गलत और मिथ्या है। ये अन्तर्दृष्टि उस समय तुम में सतत् थी, जब तुम अच्छी हालत में थे और विशेषकर जब भी भक्ति तुम्हारे अन्दर **प्रबल** होती थी।

जब साधक उन मानसिक और उच्चतर प्राणिक क्षेत्रों को छोड़कर भौतिक स्थूल चेतना में नीचे उतर आता है जिन पर स्थित होकर वह पहले-पहल भगवान् की ओर मुड़ा था, तो ये विपरीत वस्तुएँ बहुत दृढ़ और चिपकने वाली बन जाती हैं और जैसे-जैसे व्यक्ति की अधिक सहायक अवस्थाएँ और अनुभव परदे के पीछे चले जाते हैं और उसे कदाचित् ही यह समझ में आता है कि ये चीजें भी कभी उसको प्राप्त हुई थी, वैसे वैसे उसके लिये उस स्थिति में से बाहर निकलना कठिन होता जाता है।

उस समय केवल एक ही वस्तु होती है जैसा कि 'क्ष' ने कहा और मैंने भी जिस पर आग्रह रखा है, वह है इसमें से दृढ़तापूर्वक बाहर निकल जाना।

यदि एक बार व्यक्ति इन शक्तियों के सुझावों को स्वीकार करने से इनकार करने का दृढ़ निश्चय कर सके और उसे बनाये रख सके तो चाहे वे कितने ही युक्तियुक्त क्यों न प्रतीत होते हों, तब यह अवस्था या तो जल्दी या धीमे-धीमे कम हो सकती है और आगे जाकर व्यक्ति उसे पार कर जाता है और वह समाप्त हो जाती है। **योग को छोड़ देना कोई हल नहीं है।**

तुम ठीक कहते हो। विरोधी शक्तियों, उनके आक्रमण, उनके सुझावों को अब सेवा-निवृत्त कर देना चाहिये, इस साधना में वे पिछड़ गये हैं, उनका इसमें स्थान नहीं रहा है। यदि कोई व्यक्ति इस बात को समझ ले और अपनी साधना में चरितार्थ कर ले तो अन्य लोगों को इसका अनुसरण करने के लिये शायद बल प्राप्त हो सकता है।

ये चीजें अब भी इसलिये विद्यमान हैं कि साधक अभ्यासवश, कामना के कारण, प्राण के नाटक के आकर्षण से, भय से, निष्क्रिय प्रत्युत्तर और प्रतिरोध न करने वाले **तमस्** के कारण अपने को उनके प्रति खोल देते हैं। लेकिन उनके यहाँ और अधिक रहने की कोई यथार्थ आवश्यकता नहीं है या सच्चा हेतु भी नहीं है--बाहर के संसार की बात दूसरी है।

साधना इस रूप में भलीभांति चल सकती है और चलनी चाहिये कि वह क्रमशः खुलती जाय, दोष और कठिनाइयाँ स्वभावतः दूर होते जायें, प्रकाश, शक्ति और रूपान्तर अधिकाधिक महान् होते चले जायें।

संदर्भ-श्री अरविन्द के पत्र भाग-3

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

मनुष्य और विकास

मनुष्य के उत्तरोत्तर विकास के संबंध में श्री अरविन्द ने 'दिव्य जीवन' पुस्तक में विषद वर्णन किया है।

यदि कोई विकास है भी तो मनुष्य अंतिम चरण है क्योंकि उसके द्वारा पार्थिव या शरीरस्थ जीवन का परित्याग हो सकता है, किसी स्वर्ग या निर्वाण में बचकर निकला जा सकता है। पुरानी परिकल्पनाओं ने इसी अंत को देखा था। चूंकि यह मूलतः और अपरिवर्तनशील रूप से अज्ञान का जगत् है-भले ही समस्त वैश्व जीवन अपने स्वभाव में अज्ञान की अवस्था न हो-अतः यह संभावना है कि इस तरह बच निकलना ही चक्र का सच्चा अंत है।

यह ऐसी तर्कधारा है जिसमें काफी अकाट्यता और महत्त्व है और उसके महत्त्व की दृष्टि से, बहुत संक्षिप्त रूप में ही सही, उसका सामना करने के लिये, उसका उल्लेख करना जरूरी था। क्योंकि, उसके प्रस्तावों में से कुछ **प्रामाणिक** हैं। लेकिन उसकी वस्तुओं की दृष्टि पूर्ण और उसकी अकाट्यता निश्चायत्मक नहीं है।

और सबसे पहले हम बिना किसी कठिनाई के उस उद्देश्यात्मक तत्त्व के विरुद्ध उठायी जानेवाली आपत्ति से छुटकारा पा सकते हैं जिसका **पार्थिव जीवन** की रचना में इस विचार द्वारा समावेश होता है कि **निश्चेतना से अतिचेतना की ओर पूर्व-नियत विकास है,** सत्ताओं की ऊपर उठती हुई श्रेणियों का प्रगतिक्रम है जिसमें अज्ञान के जीवन से निकलकर ज्ञान के जीवन में परम उत्कर्षकारी संक्रमण होता है। विश्व के उद्देश्य के बारे में दो अलग-अलग आधारों पर आपत्ति उठायी जा सकती है-एक वैज्ञानिक तर्क जो यह मान कर चलता है कि सब कुछ निश्चेतन ऊर्जा का काम है। जो स्वचालित रूप से यंत्रवत् प्रक्रियाओं द्वारा चलती है, जिसमें उद्देश्य का कोई तत्त्व नहीं हो सकता।

दूसरी है **तत्त्वदर्शनात्मक** तर्कणा जो इस दर्शन से चलती है कि अनन्त और वैश्व में सब कुछ पहले से मौजूद है, उसमें उपलब्ध करने लायक कोई भी अनुपलब्ध चीज नहीं हो सकती, ऐसी कोई चीज नहीं हो सकती जिसे वह अपने अंदर जोड़े, क्रियान्वित करे, चरितार्थ करे।

अतः उसमें प्रगति का कोई तत्त्व नहीं हो सकता, कोई मौलिक या उद्गामी प्रयोजन नहीं हो सकता।

अगर जड़ में प्रतीयमान निश्चेतन ऊर्जा के अंदर या पीछे कोई गुप्त चेतना है तो वैज्ञानिक या जड़वादी आपत्ति की **प्रामाणिकता** टिक नहीं सकती। निश्चेतन के अंदर भी कम से कम एक **अंतस्थ** आवश्यकता की प्रेरणा मालूम होती है जो रूपों के विकास को और रूपों में विकसित होती हुई चेतना को पैदा करती है और यह भली-भांति माना जा सकता है कि वह प्रेरणा एक **गुप्त चित्-सत्ता** की विकासात्मक इच्छा है और प्रगतिशील अभिव्यक्ति के लिये उसका वेग विकास में **अंतर्जात** प्रयोजन का प्रमाण है।

यह एक सोद्देश्य तत्त्व है और इसे मानना अयुक्ति युक्त नहीं है क्योंकि सचेतन बल्कि निश्चेतन प्रयत्न का उद्भव चेतन सत्ता के किसी ऐसे सत्य से होता है जो सक्रिय हो गया हो और जड़-प्रकृति की किसी स्वचालित प्रक्रिया से अपनी परिपूर्ति के लिये चल रहा हो।

उस प्रयत्न में उद्देश्य का, अभिप्राय का जो तत्त्व है वह सत्ता के आत्म-क्रियाकारी सत्य का उस सत्ता की आत्म-प्रभावी **इच्छा शक्ति** की भाषा में अनुवाद है और अगर चेतना है तो ऐसी इच्छा-शक्ति भी होनी चाहिये और अनुवाद स्वाभाविक और अनिवार्य है।

अनिवार्यतः अपने आपको **परिपूर्ण** करनेवाला सत्ता का सत्य विकास का आधारभूत तथ्य होगा लेकिन इच्छा और उसके उद्देश्य भी क्रियाकारी **सिद्धांत-तत्त्व** के यंत्र-विन्यास के अंग के रूप में, एक तत्त्व के रूप में होने चाहिये।

तत्त्वदार्शनिक की आपत्ति अधिक गम्भीर है क्योंकि यह **स्वतःसिद्ध** मालूम होता है कि निरपेक्ष का अपने-आपको अभिव्यक्त करने के आनन्द को छोड़कर अभिव्यक्ति में और कोई प्रयोजन नहीं हो सकता। अभिव्यक्ति के अंग-स्वरूप जड़-पदार्थ में विकसनशील गति को इसी **वैश्व वक्तय** में आ जाना चाहिये। वह केवल उन्मीलन, प्रगतिशील कार्यान्वयन, निरुद्देश्य क्रमिक आत्म-प्रकटन के आनन्द के लिये हो सकती है। ❖❖❖

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

!! मेरे गुरुदेव !!

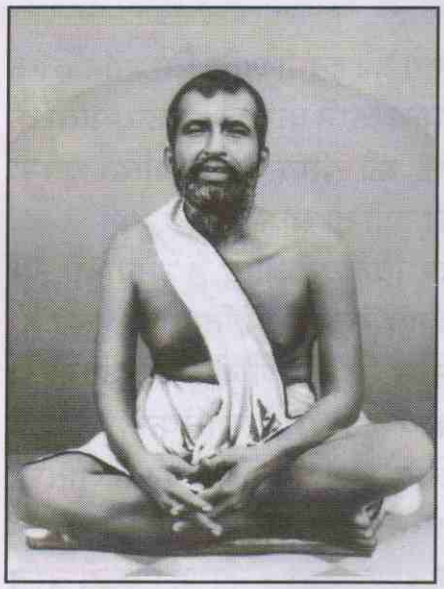

मेरे गुरुदेव के जीवन में इसी प्रकार की प्रखर तथा अच्युत पवित्रता आ गई और सामान्य मनुष्य के जीवन में जो नाना प्रकार के द्वन्द्व होते हैं, वह सब उनके लिए नष्ट हो गए। **अपना तीन चतुर्थांश जीवन व्यतीत करके उन्होंने कड़ी तपस्या द्वारा जो आध्यात्मिक सम्पदा एकत्र की थी, वह अब मानव जाति को प्रदान की जाने के लिए प्रस्तुत हो गई थी** और उसके पश्चात् उन्होंने अपना जगत् का प्रसार कार्य आरंभ किया।

उनकी शिक्षा तथा उनके उपदेश जो कुछ विलक्षण प्रकार के थे। **''हमारे देश में सबसे अधिक आदर तथा सम्मान, गुरु को मिलता है तथा हमारी ऐसी श्रद्धा रहती है कि गुरु साक्षात् ईश्वर ही है।''** उतनी श्रद्धा हम में अपने माता पिता के लिए भी नहीं होती। **माता-पिता हमें केवल जन्म ही देते हैं परंतु गुरु हमें मुक्ति -मार्ग दिखाते हैं। ''हम गुरु की संतान हैं-उन के मानस पुत्र हैं।''** किसी असाधारण महापुरुष के दर्शन करने हजारों हिंदू आते हैं और वह उनके चारों ओर भीड़ लगा लेते हैं। मेरे गुरुदेव एक ऐसे ही महापुरुष थे, परंतु मेरे गुरुदेव को यह ध्यान ही नहीं था कि उनको मान-प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए अथवा नहीं। उन्हें इस बात का रंच मात्र भी भास नहीं था कि वह एक बड़े गुरु हैं। उनको तो यही ध्यान था कि जो कुछ हो रहा है, वह सब माता ही करा रही है तथा वे स्वयं कुछ नहीं कर रहे हैं। वे सदैव यही कहा करते थे कि यदि मेरे मुँह से कोई अच्छी बात निकलती है तो वे जगन्माता के ही शब्द होते हैं-**मैं स्वयं कुछ नहीं कहता।**

अपने प्रत्येक कार्य के सम्बंध में उनका यही विचार रहा करता था और महासमाधि के समय तक उनका यही विचार **'स्थिर'** रहा। मेरे गुरुदेव किसी को ढूँढ़ने नहीं गये। उनका सिद्धान्त यह था कि मनुष्य को प्रथम चरित्रवान होना चाहिए तथा आत्मज्ञान प्राप्त करना चाहिए और उसके बाद फल स्वयं ही मिल जाता है।

वे बहुधा एक दृष्टान्त दिया करते थे कि 'जब कमल खिलता है तो मधुमक्खियाँ स्वयं ही उसके पास मधु लेने के लिए आ जाती हैं-इसी प्रकार जब तुम्हारा **चरित्ररूपी पंकज** पूर्ण रूप से खिल जायेगा और जब तुम आत्मज्ञान प्राप्त कर लोगे, तब देखोगे कि सारे फल तुम्हें अपने आप ही प्राप्त हो जायँगे।' हम सब लोगों के लिए यह एक बहुत बड़ी शिक्षा है।

मेरे गुरुदेव ने यह शिक्षा मुझे सैकड़ों बार दी, परन्तु फिर भी मैं इसे प्रायः भूल जाता हूँ। विचारों की अद्भुत शक्ति को बहुत थोड़े लोग ही समझ पाते हैं। यदि कोई मनुष्य किसी गुफा के अन्दर चला जाता है और उसमें अपने को बन्द कर किसी एक गहन तथा उदात्त विषय पर एकान्त में निरन्तर एकाग्रचित्त हो मनन करता रहता है और उसी दशा में आजन्म मनन करता करता अपने प्राण भी त्याग देता है तो उसके उसी विचार की तरंगें गुफा की दीवारों को भेदकर चारों ओर के वातावरण में फैल जाती हैं और अन्त में वे तरंगें सारी मनुष्य जाति में प्रवेश कर जाती हैं।

विचारों की यही अद्भुत शक्ति है। अतः अपने विचारों का दूसरों में प्रचार करने के लिए जल्दी नहीं करनी चाहिए। पहले हमारे पास कुछ होना चाहिए, जिसे हम दूसरों को दे सकें। मनुष्य में ज्ञान का प्रसार केवल वही कर सकता है, **जिसके पास देने को कुछ हो।** क्योंकि शिक्षा देना केवल व्याख्यान देना नहीं है और न सिद्धांतों को प्रदान करना ही इसका अर्थ है संप्रेषण। जैसे मैं तुम्हें एक फूल दे सकता हूँ, उसी प्रकार उससे भी अधिकतर प्रत्यक्ष रूप से धर्म भी संप्रेषित किया जा सकता है। और यह बात अक्षरशः सत्य है।

यह भाव भारतवर्ष में अति प्राचीन काल से ही विद्यमान है और पाश्चात्य देशों में जो 'ईश्वरदूतों की गुरु-शिष्य-परम्परा' (Apostolic Succession) का मत प्रचलित है, उसमें भी इसी भाव का दृष्टान्त पाया जाता है।

संदर्भ-विवेकानन्द साहित्य-7

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

अवतार पुरुषों की उक्तियाँ

समस्त अवतारपुरुषों की उक्तियाँ इसी प्रकार की हुआ करती हैं।

गहन रूप से विचार करने पर श्रीरामकृष्णदेव के दैनिक कार्य अत्यन्त साधारण आचरण तथा उपदेशों के भीतर वास्तव में इस प्रकार के गम्भीर अर्थ को देखकर आश्चर्यचकित होना पड़ता है। प्रत्येक अवतारपुरुष के सम्बन्ध में भी यही बात है। उनके जीवन का अवलोकन करने पर यह बात स्पष्ट प्रतीत होती है। आचार्य शंकर आदि जिन दो-एक महापुरुषों को विपक्षियों के कुतर्कजाल को छिन्नभिन्न करना पड़ा था, उन्हें छोड़ अन्य सभी महापुरुषों के जीवन में यह देखने को मिलता है कि वे साधारण भाषा में मर्मस्पर्शी छोटी-छोटी कहानी, उपमा तथा रूपक की सहायता से अपने कथन को कह व समझा गये हैं।

लम्बे-चौड़े वाक्य अथवा बड़े-बड़े समास आदि का उन्होंने कभी प्रयोग नहीं किया। किन्तु उन सीधी-सादी बातों तथा छोटी-छोटी उपमाओं के भीतर इतने भाव तथा साधारण-मानव को उच्च आदर्श पर पहुँचा देने की इतनी शक्ति विद्यमान है कि हजारों वर्ष तक प्रयत्न करने के बाद भी उन भावों के अन्त अथवा शक्ति की सीमा को निर्धारित करना हमारे लिए सम्भव नहीं हो सका है।

जितना ही हम विवेचन करते हैं उतना ही हमें उच्च से उच्चतर भावसमूह उनमें दिखायी पड़ते हैं; जितना ही हम उनका विश्लेषण करते हैं, उतना ही हमारा मन 'अनित्य अशुभ सांसारिक-राज्य को छोड़कर ऊँचे से ऊँचे स्थल पर आरूढ़ होता जाता है तथा 'परमपदप्राप्ति', 'ब्राह्मी स्थिति', 'मोक्ष' अथवा 'भगवद्दर्शन' की ओर - कारण एक ही वस्तु को नाना प्रकार से देखकर महापुरुषों ने इन विभिन्न नामों से उसका निर्देश किया है - जितना ही कोई अग्रसर होता रहता है, उतना ही उसे उन सीधी-सादी बातों के गहरे तात्पर्य का यथार्थ ज्ञान तथा अनुभव होने लगता है।

-संदर्भ-श्री रामकृष्ण लीला प्रसंग-1
पृष्ठ-362

विज्ञान का निज धाम से संचालन

कुछ मनुष्य सामर्थ्यपूर्वक विज्ञानमय कोश का प्रयोग करने में भी सक्षम है । क्योंकि इस समय विज्ञान अपने निज धाम से संचालित न होकर, बुद्धिप्रधान मन में स्थित होकर कार्य करता है। यही कारण है, विज्ञान सृजन के स्थान पर विध्वंश का कार्य अधिक कर रहा है। योगी इससे भी परे साक्षात् विज्ञान (विज्ञानमय कोश के निजधाम) तक जा पहुँचता है। जब विज्ञान अपने निजधाम में संचालित होकर कार्य करेगा, तब इसका सम्पूर्ण उपयोग मात्र सृजन में ही होगा। इसीलिए महर्षि श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है

"भारत, जीवन के सामने योग का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।" याज्ञवल्क्य जैसे महानतम ऋषि तो साक्षात् आनन्दमय कोश तक पहुँच चुके हैं। परन्तु अन्तिम दो कोश अभी तक प्राप्त नहीं हो सके हैं। सिद्धयोग अर्थात् महायोग जो 'गुरु कृपारूपी शक्पिात दीक्षा' से सिद्ध होता है, उसके साधक सातों कोशों का ज्ञान प्राप्त करने में सफल हुए हैं।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग-संदर्भ-'दीक्षा' शीर्षक से

बाड़मेर आश्रम-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का 93वाँ अवतरण दिवस श्रद्धा पूर्वक मनाया गया। (24 नवम्बर 2018)

www.the-compassion.org

मुम्बई आश्रम–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का 93वाँ अवतरण दिवस श्रद्धा पूर्वक मनाया गया। ध्यान के बाद साधकों ने बताई अनुभूतियाँ। (24 नवम्बर 2018)

प्रत्येक रविवार को अश्विनी हॉस्पीटल मुम्बई में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। दर्जनों मरीजों ने सिद्धयोग दर्शन की जानकारी लेकर ध्यान किया। (नवम्बर 2018)

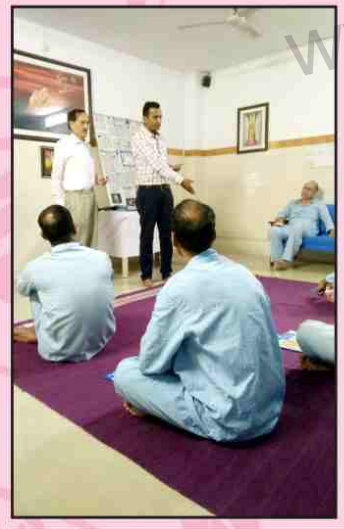

www.the-

अवतरण दिवस की पूर्व संध्या पर जोधपुर आश्रम का विहंगम दृश्य

गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर)–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का 93वाँ अवतरण दिवस श्रद्धा पूर्वक मनाया गया। (24 नवम्बर 2018)

www.thesecomforter.org

जम्मू कश्मीर के विभिन्न विद्यालयों व सार्वजनिक स्थलों पर ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (22 से 27 अक्टूबर 2018)

रायपुर (छत्तीसगढ़)-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का 93वाँ अवतरण दिवस श्रद्धा पूर्वक मनाया गया। (24 नवम्बर 2018)

www.thecomforter.org

बालोतरा (बाड़मेर) में ध्यान व सिद्धयोग आयोजित 26 नवम्बर 2018

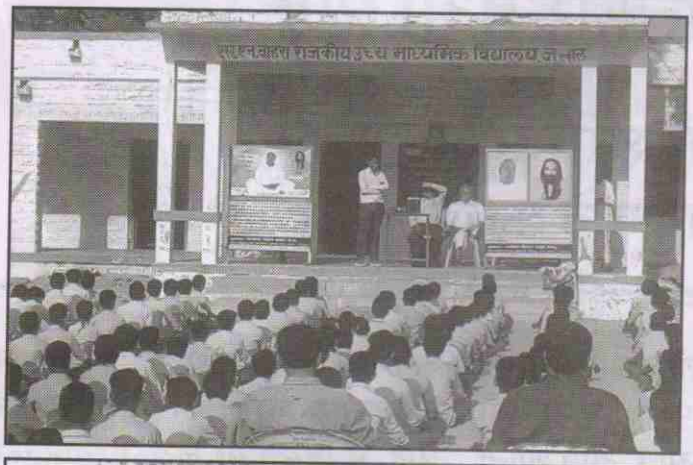

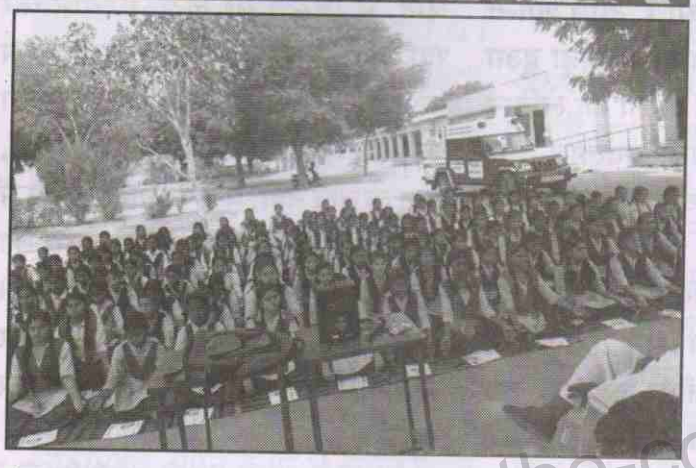

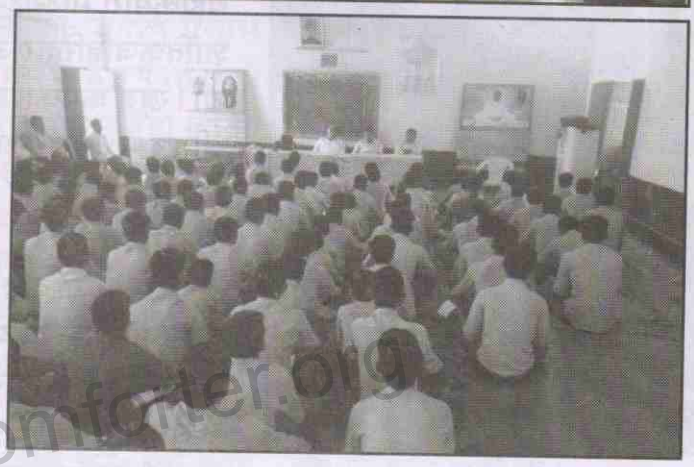

www.the-comforter.org

हैदराबाद-सद्गुरु सियाग का 93वाँ अवतरण दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया 24 नवम्बर 2018

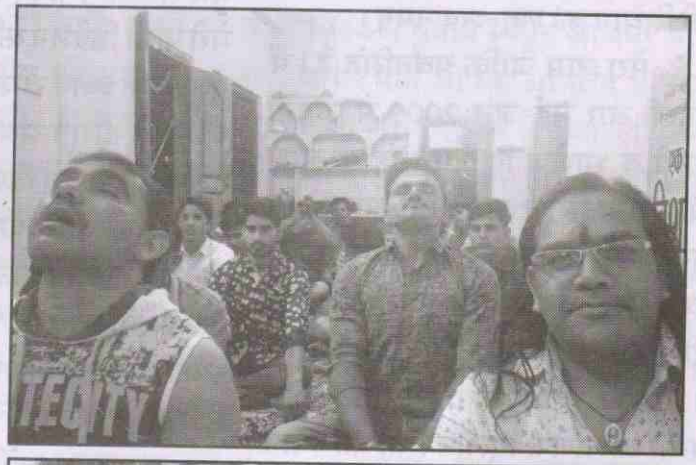

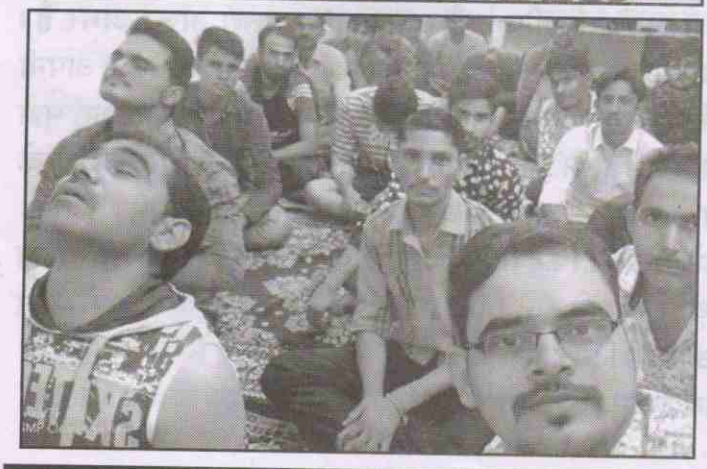

आत्म साक्षात्कार हुआ

आत्मा की अमरता और शरीर से अलग कर दिव्यता की अनुभूति कराई

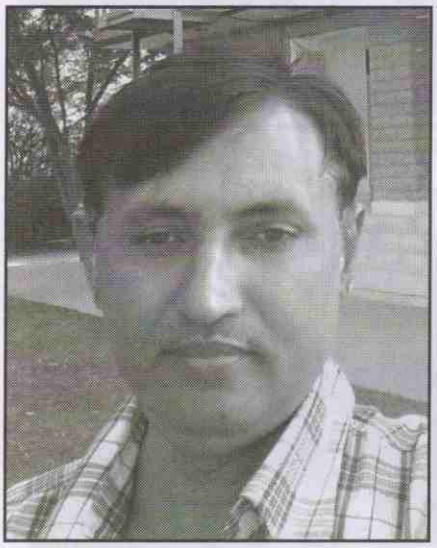

सर्व समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग को शत्-शत् नमन्।

मेरा नाम जॉकि पर्वतसिंह है। मैं पहली बार मई-जून 2009 में अपनी पत्नी व भाणेज दिलीप सिंह के साथ चौपासनी स्थित आश्रम में आया और गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के दर्शन किये। गुरुदेव के कार्यक्रम में शक्तिपात दीक्षा ली और संजीवनी मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान किया। उसी दिन मेरी पत्नी व भाणेज दिलीप सिंह का ध्यान लगना शुरु हो गया लेकिन मुझे ध्यान नहीं लगा क्योंकि मुझमें काफी गुरुर (अहंकार) था। और गुरुदेव अपने प्रवचन में कहते थे कि इस ज्ञान की पहली शर्त है-झुककर माँगना। अहंकार रहित, निष्कपट भाव से माँगना।

मैं पहले भी आध्यात्मिकता की खोज में बहुत जगह घूम चुका था। 1986 से 1994 तक मैं ओशो आश्रम पूणे, गुरु अयंगर आश्रम पूणे, प्रजापिता ब्रह्मकुमारी माऊण्ट आबू, ओम शान्ति शांतिकुंज हरिद्वार आदि से जुड़ा हुआ था। खूब कर्मकाण्ड करता था लेकिन जीवन में कोई स्थायी बदलाव और किसी भी प्रकार की आध्यात्मिक अनुभूति नहीं हुई।

1994 के बाद फिर किसी से जुड़ने का प्रयास नहीं किया। सन् 2009 में, मैं सद्गुरुदेव सियाग जी से जुड़ा था, तब मैं समझता था कि मैं तो इतने बड़े-बड़े गुरुओं के पास होकर आया हूँ, यहाँ इस मंत्र से मेरा क्या होने वाला है? लेकिन मेरी पत्नी डिप्रेशन की मरीज थी। उसको गुरुदेव के ध्यान से फायदा हुआ। उसको ध्यान के दौरान सब देवी-देवताओं के दर्शन होने लगे व डिप्रेशन से काफी राहत मिली। उसको ध्यान के दौरान जिस अलौकिक आनंद की अनुभूति होती थी, उसकी मैं सपने में भी झलक नहीं पा सका। मुझे ध्यान लगाने पर भी, ध्यान नहीं लगता था।

सन् 2010 में, मैं जॉकि दिलीप सिंह(गुरुदेव के शिष्य)के पास दिल्ली में था और मैंने कहा कि मैं ध्यान लगाने बैठता हूँ लेकिन मेरा ध्यान क्यों नहीं लगता? दिलीपसिंह ने कहा "आज मेरे साथ ध्यान लगाने बैठो" फिर मैं और दिलीप सिंह ध्यान लगाने बैठे। गुरुदेव से प्रार्थना की और उस दिन पहली बार मेरा ध्यान लगा व ध्यान में अच्छा अनुभव हुआ व फिर मैंने नियमित ध्यान लगाना शुरु कर दिया। चार-पाँच दिन बाद, मैं बिस्तर पर लेटकर ध्यान कर रहा था। मुझे ध्यान में ही एकदम एहसास हुआ कि मैं हूँ लेकिन कहाँ पर हूँ, पलंग पर नहीं, कुर्सी पर नहीं, बिस्तर पर नहीं, पीठ के बल नहीं, पैरों पर नहीं लेकिन मैं हूँ तो कमरे में ही और मुझे मेरे शरीर का कुछ भी एहसास नहीं हो रहा था। मुझे ऐसा एहसास हुआ कि मैं, अपने शरीर से अलग होकर निर्वात्त में विचरण कर रहा हूँ।

मुझे यह आभाष हो रहा है कि मैं हूँ लेकिन मेरे हाथ नहीं, पैर नहीं, शरीर नहीं, बस मैं हूँ। फिर मेरे ध्यान की गहराई कम होने लगी और धीरे-धीरे एहसास हुआ कि मैं तो पलंग पर ही लेटा हुआ हूँ। मंत्र जप व ध्यान कर रहा हूँ लेकिन गुरुदेव आपने तो सचमुच मेरी आत्मा को, मेरे शरीर से अलग करके दिखा दिया।

गुरुदेव शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम में, मंत्र से पहले जो प्रवचन देते थे उसमें बोलते थे कि **"यह शरीर नहीं, आत्मा है आत्मा।" आत्मा अजर अमर है।** और उस दिन ध्यान में गुरुदेव ने अपनी बात को पूर्णतः सत्य प्रमाणित कर, मुझे प्रत्यक्ष अनुभूति करा दी। गुरुदेव आपके चरणों में मेरा शत्-शत् नमन।

-जॉकि पर्वतसिंह
जोधपुर

www.the-comforter.org

भविष्य दर्शन-आश्चर्य पूर्ण सच्चाई

क्या निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ? प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर, उनके चित्र पर 15 मिनट ध्यान करके देखें !

सर्वप्रथम हमारे घर से मेरे बड़े भाई साहब दीक्षित हुए थे। जब वो ध्यान करते तो उनके चेहरे पर दिन भर छाए रहने वाले नशे के कारण हम इसका विरोध करते थे। कभी-कभी उनको ध्यान में योग होता था। दिनांक 28 सितम्बर 1993 को रात्रि लगभग 9 बजे जब भाईसाहब अपने कमरे में ध्यान करने हेतु जा रहे थे तो उन्होंने मुझे भी ध्यान करने के लिए कहा।

मैं चूंकि पढ़ाई कर रही थी। अतः मैंने मजाक-मजाक में टाल दिया। फिर कुछ देर पश्चात् सोचा, ध्यान लगाने में क्या हर्ज है ? कौनसा ध्यान लग ही जायेगा। क्यों न भाई साहब का कहना मान लूं। अतः मैं चुपचाप उनके कमरे में जाकर उनके पास ही गुरुदेव की फोटो के सम्मुख बैठ गई। आँखें बन्द करके गुरु-गुरु का मानसिक जाप करने लगी। कुछ ही देर बाद मुझे महसूस हुआ कि रीढ़ की हड्डी में से होकर कोई शक्ति करंट की भांति ऊपर की ओर उठ रही है, इसके साथ ही रीढ़ की हड्डी में झटके लगने लगे, कट कट की आवाज आने लगी और कमर एकदम सीधी हो गई। दोनों हाथों में खिंचाव हुआ, जिसके कारण लटके हुए हाथ एकदम सीधे हो गये। हाथों में भी कन्धों से शुरू होकर हथेलियों की ओर कई झटके लगे और हाथ सीधे हो गए।

मैंने रोकने का विफल प्रयास किया परन्तु मेरे बस में कुछ न था। मुझे इतनी अजीबोगरीब अनुभूति हो रही थी कि सोचने का समय भी नहीं मिला। यानि विचार शुन्यता की सी स्थिति थी। फिर गर्दन में खिंचाव होने लगा, गर्दन सीधी होकर पीछे की ओर मुड़ने लगी और मेरा शरीर भी पीछे की ओर मुड़ने लगा। मुझे लगा की कोई शक्ति मुझे पीछे की ओर धकेल कर, मेरी कोई विशिष्ट मुद्रा करवाना चाहती है। पैर सहज आसन की स्थिति में ही रहे व सिर जमीन पर पीछे की ओर मुड़ा हुआ ही टिक गया। और अचानक कहाँ से मुझमें इतने रुदन भाव उमड़ पड़े कि मैं सिसकिया लेने लगी व कुछ देर में उग्र रूप से रोने लगी। यह सिलसिला करीब 4-5 मिनट तक चला, तब तक भाई साहब अपना ध्यान समाप्त कर उठ चुके थे व रोने-चिल्लाने के कारण घर के सभी सदस्य भी उसी कमरे में एकत्र हो गये।

भाई साहब ने मेरी स्थिति देखकर मुझे गुरु का जाप बन्द करने को कहा व सिर सहलाया तो मेरा ध्यान भंग हुआ। तब तक आँखें ऐसी बन्द थी जैसे कि चिपका दी गई हो। जब मैंने आँखे खोली तो मेरी आँखें भी अत्यधिक लाल थी और घर से सभी सदस्यों को मेरे इर्दगिर्द एकत्र देखकर मेरी बड़ी विचित्र स्थिति थी। मैं स्वयं भाई साहब के समक्ष बड़ी लज्जित थी कि सदैव उनका मजाक उड़ाया करती थी और आज मैं स्वयं गुरु शक्ति को साक्षात् अनुभव में ले चुकी थी। खैर, फिर भी पारिवारिक माहोल व मेरी पढ़ाई के कारण मैंने लगभग 6-7 माह तक दीक्षा नहीं ली परन्तु यदा-कदा अब भाई साहब के साथ ध्यान अवश्य कर लेती थी। ध्यान में कभी-कभी योग होता था। शरीर में हल्कापन आ जाता था व खुमारी बनी रहती थी।

आखिर शादी के बाद जुलाई माह 1994 में प्रताप स्कूल जोधपुर में, मैंने व मेरे पति जो कि आयुर्वेद डॉक्टर है, दोनों ने सदगुरुदेव से दीक्षा ली। उनको भी दीक्षा के प्रथम दिन में ही गर्दन की कसरत होने लग गई थी। आज हम दोनों प्रसन्नचित है और नियमित ध्यान लगाते हैं। घर-गृहस्थी के रोजमर्रा के कामकाज यथावत रूप से चलायमान है।

लाभ- मेरा ध्यान लगाने की जिज्ञासा बनने का कारण मुझे हमेशा तेज सिरदर्द होता था, तब पढ़ाई छोड़कर कमरे में अंधेरा कर, मैं सो जाया करती थी। डॉक्टर से दवाइयाँ भी ली थी। आँखें भी सामान्य थी। ध्यान करने के बाद से मुझे सिरदर्द कभी-कभी ही होता है, पूर्व में लगभग रोजाना ही सिरदर्द हो जाया करता था।

www.the-comforter.org

अनुभूतियाँ- मुझे भविष्य में घटने वाली घटनाओं का पूर्वाभास होता है। एक बार जब हम उदयपुर घूमने हेतु गए थे तो वहाँ ध्यान में जोधपुर में भूकंप आया है, ऐसा दृश्य दिखाई दिया। परिवार के सदस्य दिखाई दिए व सभी (हिलते-डुलते) व कुछ पानी भी पिया था। दो दिन बाद ही अखबार में जोधपुर में भूकंप के समाचार पढ़े जिसमें उल्लेख था कि हल्का झटका कुछ सैकण्ड तक जोधपुर में रहा।

उसके कुछ दिन पश्चात् ही मुझे खूब लाशों के ढेर दिखे व कुछ लोग उन लाशों को रौंदकर जा रहे थे इतना मार्मिक दृश्य था कि मेरा ध्यान भी टूट गया। उसके लगभग 2-3 दिन पश्चात् ही राजस्थान पत्रिका में रूवांडा में नरसंहार की बड़ी-बड़ी हेडलाइन में न्यूज थी। यह प्रसंग मैंने मेरे पति को भी बतलाया, अतः वे भी आश्चर्यचकित हुए।

मैं, अब ध्यान सोते समय करती हूँ। सोते-सोते भी तन्द्रा सी बनी रहती है। कुछ दिनों पहले ही मुझे सम्पूर्ण आसमान पर श्रीकृष्ण भगवान् छाए हुए दिखे। वे सम्पूर्ण दुनिया को कुछ उपदेश दे रहे थे, परन्तु मुझे स्पष्ट सुनाई नहीं दिया।

श्रीमती नीलमसिंह
राजपुरोहित
शास्त्री नगर, जोधपुर
संदर्भ-सवितादेव संदेश से

पारस्परिक सहयोग

(सच्ची मित्रता)

और बस इसी तरह हम बालकों का समूह चलता गया-बढ़ता गया। हमारे निकट के लोगों ने चारों ओर से हमें जो दी, वे थी गालियाँ और ठोकरें। द्वार-द्वार पर हमें भोजन की भिक्षा माँगनी पड़ी, कहीं हमें दुत्कार मिला तो कहीं घुड़की। बात यह है कि बचा-खुचा अन्न ही हमें दिया गया। यहाँ एक टुकड़ा मिला तो वहाँ दूसरा। अन्त में हमें एक घर भी मिल गया- टूटा-फूटा खाण्डहर, जिसमें रहते थे-फुफकारते हुए नाग। पर हमें उसे लेना ही पड़ा-सबसे सस्ता जो था न? हम उसमें गये और जाकर रहे उसके भीतर।

इस तरह कुछ वर्ष काटे। सारे भारत का भ्रमण किया और यही कोशिश की कि हमारे विचार और आदर्श को एक निश्चित स्वरूप प्राप्त हो जाए। दस वर्ष बीत गये-प्रकाश की किरण न दिखी और दस वर्ष बीते। हजारों बार निराशा आयी।

पर इन सब के बीच हरदम आशा की एक किरण बनी रही और वह था हम लोगों का उत्कट पारस्परिक सहयोग, हमारा आपसी प्रेम। आज हमारे साथ लगभग सौ साथी हैं-स्त्री और पुरूष। वे ऐसे हैं कि यदि मैं एक बार शैतान भी बन जाऊँ तो भी वे ढाढ़स बँधाते हुए कहेंगे, 'अरे अभी हम हैं! हम तुम्हें कभी भी न छोड़ेंगे!' और सचमुच यह बड़ा सौभाग्य है। सुख में, अकाल में, 'दर्द में, कब्र में, स्वर्ग में, नरक में जो मेरा साथ न छोड़े, **सचमुच वही मेरा मित्र है।** ऐसी मैत्री क्या हँसी मजाक है? ऐसी मित्रता से तो मानव को मोक्ष तक मिल सकता है। सचमुच मोक्ष ऐसा ही प्रेम करने से आता है। यदि इस दुनिया में, आप में वह भक्ति है, वह श्रद्धा है, वह शक्ति है, वह प्रेम है तो आप कभी निराश नहीं होंगे।

और उसी के बल पर हिमालय से कन्याकुमारी तथा सिंधु से ब्रह्मपुत्र तक हमने भ्रमण किया।

-स्वामी विवेकानन्द

www.the-comforter.org

कमर दर्द ठीक हुआ

सर्वप्रथम पूज्य सद्गुरुदेव को प्रणाम, नमन् व वंदन। मैं साहब सिंह भारतीय थल सेना मुम्बई में कार्यरत हूँ। मैं कमर दर्द की तकलीफ से परेशान था जब जाँच करवाई तो MRI में PIVD (Prolapse Intervertebral Disk) L4-L5 निकला व मुम्बई नवाल हॉस्पिटल INHS अश्विनी में भर्ती होना पड़ा। उस समय तक परेशानी भी बढ़ गयी थी। एक ही जगह पर दो मिनट से ज्यादा नहीं बैठ सकता था। एक पैर भारी हो जाता था और पैर में सूनापन आ जाता था।

कुछ भी काम करने की हिम्मत नहीं होती थी व आलसपन छाया रहता था। झुकने में तकलीफ होती थी व कमर में टेढ़ापन आ गया था व टेढ़ा होकर चलता था। डॉक्टर ने बताया कि आपके रीढ़ की हड्डी में L4,L5, के बीच में जो INtervertebral Disk होती है व घिस गयी हैं व L4-L5 दोनों vertebral आपस में मिल रही है तो जो कभी पॉव में जाती है व उनके बीच compress Nevrosungrein में Operation की सलाह दी व बताया कि Operation काफी Risky है। उसी दौरान एक साधक ने मुझे गुरुदेव के बारे में बताया व ध्यान करवाया तो पहले ही दिन मेरा ध्यान लग गया और मैं एक ही स्थिति (position) में आधा घण्टा बैठा रहा व मुझे कोई दर्द नहीं हुआ जबकि पाँच मिनट से ज्यादा एक position में नहीं बैठ सकता था तो उसी दिन से मुझे गुरुदेव के प्रति समर्पण हो गया।

फिर अच्छा ध्यान लगने लगा। ध्यान के दौरान शरीर पीछे जाने लग जाता था व आँखों में पानी गिरने लगता था व रीढ़ की हड्डी में टक-टक की आवाज आने लगती थी जैसे कोई हथौड़ी से मरम्मत कर रहा है व ध्यान के दौरान नींद जैसे लगने लग जाता था। मैंने 11 मई 2009 से ध्यान करना शुरु किया। पाँच-सात दिन में ही मुझे बहुत आराम मिल गया। पन्द्रह दिन में, मैं बिल्कुल स्वस्थ हो गया।

पहले वार्ड में दर्द के इंजेक्शन लगते थे व टेबलेट देते थे तो सात दिन बाद दर्द में कुछ आराम मिलता था। गुरुदेव का मंत्र जप व ध्यान करने पर बहुत आराम मिल गया तो इंजेक्शन व टेबलेट बन्द कर दी व मैने डॉक्टर को operation से मना कर दिया। पन्द्रह दिन में, मैं बिल्कूल ठीक हो गया। डॉक्टर ने अस्पताल से छूट्टी दे दी व डॉक्टर ने मुझे वजन उठाना, दौड़ने, जम्प करने P-T ijsM करने व गेम खेलने से मना किया व साधारण जीवन जीने की सलाह दी। अब मैं नियमित नाम जप व ध्यान कर रहा हूँ। मैंने सितम्बर 2009 में गुरुदेव से दीक्षा जी। अब मैं पूर्णरूप से स्वस्थ हूँ तथा कोई दवाई नहीं खाता हूँ व सेना की सारी ड्यूटी व दिनचर्या का पालन करता हूँ। सूबह 5 कि.मी. दौड़ता हूँ व परेड भी करता हूँ, गेम खेलता हूँ व मुझे कोई तकलीफ नहीं हो रही है। घर पर भी माताजी ध्यान कर रही है।

पहले मैं माँसाहारी था। अब खाने का मन ही नहीं करता व शुद्ध शाकाहारी बन गया हूँ। ऐसे समर्थ सदगुरुदेव को कोटि-कोटि नमन् जिनकी कृपा से मुझे स्वस्थ जीवन मिला। अभी में गुरुदेव का प्रचार कर रहा हूँ। मै चाहता हूँ ज्यादा से ज्यादा लोग दर्शन से लाभान्वित हो।

-साहब सिंह पुत्र श्री चन्द्रसिंह
कबलाना, झज्जर
हरियाणा

www.the-comforter.org

"हमारे ऋषियों ने जिस दिव्य ज्ञान को प्राप्त किया था, वह पुनः लौटकर आ रहा है, हमें इस प्रसाद को सम्पूर्ण विश्व में बाँटना है।"

-महर्षि श्री अरविन्द

संसार को कुछ दे सकेंगे। बाकी जिन आध्यात्मिक गुरुओं से संसार के लोग उम्मीद लगाए बैठे थे, उनसे लोग निराश हो चुके हैं। थोथा उपदेश कर्मकाण्ड प्रदर्शन, स्वांग, शब्द जाल, तर्कशास्त्र और अन्धविश्वास से लोग पूर्ण रूप से निरुत्साहित हो चुके हैं। इसके विपरीत जिन-जिन देशों ने वैज्ञानिक उन्नति की है, वहाँ अशान्ति अहिंसा के ताण्डव नृत्य ने लोगों को भयभीत कर दिया है।

अतः उनको भी इस पथ के अलावा शान्ति प्राप्त करने का दूसरा रास्ता खोजना पड़ रहा है।

अमेरिका में प्रवचन देते हुए श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था-''**विभिन्न मतमतान्तरों या सिद्धान्तों पर विश्वास करने के प्रयत्न हिन्दू धर्म में नहीं है, वरन् हिन्दू धर्म तो प्रत्यक्षानुभूतियों और साक्षात्कार का धर्म है। केवल विश्वास का धर्म, हिन्दू धर्म नहीं है। हिन्दू धर्म का मूलमंत्र तो 'मैं' आत्मा हूँ, यह विश्वास होना और तदुप बन जाना है।**'' आज हमारे धर्म से प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार की बात पूर्णरूप से विदा हो चुकी है। यही धर्म का प्राण थी। अतः इसके अभाव में प्राणहीन धर्म मानव को कोई लाभ पहुँचाने की स्थिति में नहीं है।

''**परिवर्तन**'' प्रकृति का अटल सिद्धान्त है। कोई भी शक्ति इसे प्रभावित नहीं कर सकती है। यह क्रम अनादि काल से चलता आया है। अतः निराशा का कोई कारण नहीं। अंधेरे और प्रकाश का संघर्ष हमारे अन्दर अनादि काल से चला आ रहा है। रात्रि के देवता कभी नहीं चाहते कि प्रकाश हो परन्तु फिर भी रात और दिन का क्रम अनादि काल से चला आ रहा है। हमें खुले दिल से हमारी कमजोरी को स्वीकार करके आध्यात्मिक जगत् में शोध कार्य प्रारम्भ करने चाहिए, जिस प्रकार भौतिक विज्ञान तत्काल परिणाम देना प्रारम्भ कर देता है उसी प्रकार उसका जनक अध्यात्म विज्ञान भी परिणाम देता है।

इस जगत् के सभी सौदे नगद के है। यहाँ उधार का काम ही नहीं। परिणाम के अभाव में ही लोग इससे विमुख हुए है। **आध्यात्मिक विज्ञान भौतिक विज्ञान का जनक हैं।** आज तक का सारा प्रकट संसार उसी परमसत्ता की देन है। पिता पुत्र में द्वेष कैसा? इस कृत्रिम द्वेष भाव ने ही संसार को आज की अशान्त स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। इसके बारे में महर्षि श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है:- ''एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन के लिए हर आवश्यक है।'' **अर्थात् जीवन का हर कार्य कमोवेश अध्यात्म से ओत-प्रोत है।** वैदिक काल के बाद मनुष्य निरन्तर उस परमसत्ता से अलग हटता गया।

आज का मानव उस क्रमिक अलगाव की प्रक्रिया के कारण, उस परमसत्ता से सर्वाधिक दूरी पर आकर खड़ा हो गया है। कृत्रिम पतन के साथ हम लोगों ने **'इहलोक'** के स्थान पर केवल **'परलोक'** की तरफ ताकना प्रारम्भ कर दिया। समाज के आधे अंग-स्त्रियों को पंगु बना कर रख दिया। उसे आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत कुछ बातों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। **जगत् जननी के साथ इस अन्याय के कारण ही संसार आज इतना दुःखी है।**

स्त्री जाति का माँ का स्वरूप, बहिन का स्वरूप, दादी का स्वरूप आदि सभी स्वरूप भूलकर उसको केवल भोग की वस्तु ही माना जा रहा है। संसार के मानव ने जगत् जननी की ऐसी दुर्गति कर दी कि उसे रसातल में पहुँचा दिया है। हमारे प्रायः सभी धर्मगुरुओं ने कंचन और कामिनी का जो स्वरूप बना डाला है, वही दुःखों का कारण हैं।

इसके अतिरिक्त आराधनाओं का ऐसा स्वरूप बना कर रख दिया कि जिसे स्त्रियाँ अपनी प्राकृतिक संरचना के कारण, करने में असमर्थ हैं। जब तक धर्म का असली स्वरूप प्रकट नहीं हो जाता, इस क्षेत्र में प्रगति और शान्ति असम्भव है।

श्री अरविन्द ने मृणालिनी देवी को पत्र लिखा था -''ईश्वर यदि है तो **उनके अस्तित्व को अनुभव करने का, उनका साक्षात्कार प्राप्त करने का कोई-न-कोई पथ होगा, वह पथ चाहे कितना भी दुर्गम क्यों न हो? उस पथ से जाने का मैंने दृढ़संकल्प कर लिया है। हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही वह पथ है। उस पर चलने के नियम भी दिखा दिये है।** उन सबका पालन करना, मैंने प्रारम्भ कर दिया है, एक माह के अन्दर अनुभव कर सका हूँ कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है। जिन जिन चिह्नों की बात कही गई है, मैं उन सब की उपलब्धि कर रहा हूँ।

''महर्षि अरविन्द के अनुसार उस पथ पर चलकर हर प्राणी सिद्धि प्राप्त कर सकता है। इस पथ पर चलने के अधिकारी स्त्री-पुरुष दोनों बराबर के हकदार है। मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार भी एक मात्र यही रास्ता है। जिस पर चलने से ही उस परमधाम तक की यात्रा सम्भव है।

संसार के प्रायः सभी धर्म संसार की उत्पत्ति **'शब्द'** से मानते हैं। इस

www.the-comforter.org

सम्बन्ध में वेद स्पष्ट कहता है "आओ उस ज्योति में पहुँचे जो स्वर लोक की है, उस ज्योति में जिसे कोई खाण्ड खाण्ड नहीं कर सकता।" वेद स्पष्ट कहता है कि जिस ज्ञान को (आनन्द को) तामसिक वृतियों ने कैद कर रखा है, उसकी मुक्ति केवल "प्रकाशप्रद शब्द" से ही सम्भव है। वेद बारम्बार उस प्रकाशप्रद शब्द से जो दिव्य प्रकाश निकलता है, उससे मिलने वाले दिव्य आनन्द की प्रार्थना करता है। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द ने वेद रहस्य में लिखा है :- वैदिक द्रष्टाओं ने प्रेम पर ऊर्ध्व से अर्थात् इसके स्रोत और मूल स्थान से दृष्टिपात किया और उन्होंने अपनी मानवता में उसे दिव्य आनन्द के प्रवाह के रूप में देखा और ग्रहण किया। मित्र देव के इस आध्यात्मिक वैश्व आनन्द को वैदान्तिक आनन्द अर्थात् वैदिक मयस् की व्याख्या करती हुई तैत्तिरीय उपनिषद् इसके विषय में कहता है कि "प्रेम इसके शीर्ष स्थान पर है।" परन्तु प्रेम के लिए वह जिस शब्द 'प्रियम्' को पसंद करती है, उसका ठीक अर्थ है आत्मा के आंतरिक सुख और संतोष के विषयों की आनन्ददायकता। वैदिक गायकों ने इसी मनोवैज्ञानिक तत्त्व का उपयोग किया है। उन्होंने मयस् और प्रयस् का जोड़ा बनाया है।

मयस् है सब विषयों से स्वतंत्र आन्तरिक आनन्द तत्त्व और प्रयस है पदार्थ और प्राणियों में आत्मा को मिलनेवाले हर्ष और सुख के रूप में उस आनन्द का बहि-प्रवाह। वैदिक सुख है यही दिव्य आनन्द जो अपने साथ पवित्र उपलब्धि का और सब पदार्थों में निष्कलंक सुख के अनुभव का वरदान लाता है। आज संसार से वह प्रकाशप्रद शब्द जिसके दिव्य प्रकाश से दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है, कहाँ चला गया।

जब तक हम संसार में इसकी भौतक रूप से प्रत्यक्षानुभूति नहीं करवा देते, काम चल ही नहीं सकता है। इस दिव्य आनन्द और शब्द के बारे में भगवान् ने गीता में स्पष्ट कहा है। शब्द से सृष्टि की रचना के सम्बन्ध में भगवान् ने 17वें अध्याय के 23वें श्लोक में कहा है:-

'ऊँ' तत्सदिति निर्देशो
ब्रह्मणस्त्रविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च

यज्ञाश्च विहिताः पुरा।। 23।।

(हे अर्जुन!) "ऊँ तत् सत् ऐसे (यह) तीन प्रकार का सच्चिदानन्द घन ब्रह्म का नाम कहा है। उसी से सृष्टि के आदिकाल में ब्राह्मण और वेद तथा यज्ञादिक रचे गये है।" इससे स्पष्ट होता है कि संसार की उत्पति उसी प्रकाशप्रद शब्द (ईश्वर) से हुई है। उस शब्द से जो दिव्य आनन्द आता है, उस सम्बंध में भगवान् ने गीता के 5वें अध्याय के 21वें श्लोक तथा छठे अध्याय के 22वें, 27वें तथा 28वें श्लोक में कहा है:-

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा
विन्दत्यात्मनि यत्सुखाम।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा
सुखामक्षयमश्नुते।। 21।।

बाहर के विषयों में आसक्तिरहित अन्तःकरण वाला पुरुष अन्तः करण में जो भगवत् ध्यान जनित आनन्द है, उसको प्राप्त होता हैं। वह पुरुष सच्चिदानन्द घन परब्रह्म परमात्मारूप योग में एकीभाव से स्थित हुआ, अक्षय आनन्द को अनुभव करता है।

सुखामातयन्तिक यत्तद्बुद्धि
ग्राह्यमतीन्द्रियम्।
वेत्ति यत्र न चैवाय
स्थितश्चलति तत्त्वतः।। 21।।

"इन्द्रियों से अतीत केवल शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि द्वारा ग्रहण करने योग्य जो अनन्त आनन्द है, उसको जिस अवस्था में अनुभव करता है और जिस अवस्था में स्थित हुआ यह योगी भगवत्स्वरूप से नहीं चलायमान होता है।"

प्रशान्तमानसं ह्येनं
योगिनं सुखामुत्तमम्।
उपैति शांतरजसं
ब्रह्मभूतमकल्मषम्।। 27।।

क्योंकि जिसका मन अच्छी प्रकार शान्त है (और) जो पाप से रहित है और जिसका रजोगुण शान्त हो गया है, ऐसे इस सच्चिदानन्दघन ब्रह्म के साथ एकीभाव हुए योगी को अति उत्तम आनन्द प्राप्त होता है।

यन्जन्नेवं सदात्मान
योगी विगत कल्मषः
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्श
मत्यन्तं सुखामश्नुते।। 28।।

"पाप रहित योगी इस प्रकार

www.the-comforter.org

निरंतर आत्मा को (परमात्मा में) लगाता हुआ, सुख पूर्वक परब्रह्म परमात्मा की प्राप्तिरूप अनन्त आनन्द को अनुभव करता है''। आज वह आनन्द कहाँ चला गया। गीता के उपदेशक और व्याख्याता त्याग, तपस्या, दान, पुण्य, स्वर्ग, नरक का उपदेश दे रहे हैं। इस मूल तत्त्व की अनुभूति क्यों नहीं करवा रहे हैं? **गीता के उपदेश को अर्जुन से अधिक कोई नहीं समझ सकता है।** उसने उपदेश सुनने के बाद जो कुछ किया, गीता हमें वही दर्शाती है। अर्जुन ने कौन सा दान पुण्य, त्याग, तपस्या गीता का उपदेश सुनने के बाद किया।

वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) के अनुसार मनुष्य सात तत्त्वों से संघटित है, जिसके कोशों में आत्मा अन्तर्निहित है। **वे हैं :- 1. अन्नमय कोश 2. प्राणमयकोश 3. मनोमयकोश 4. विज्ञानमय कोश 5. आनन्दमयकोश 6. चित्मय कोश और 7. सत्मयकोश।** अन्न से लेकर विज्ञान तक चार तत्त्व भौतिक सत्ता से सम्बन्धित है और आनन्द से सत् तक तीनों उस परमसत्ता (सत्+चित्+आनन्द) ***सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा*** से सम्बन्धित हैं। हिन्दू दर्शन के अनुसार **मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्र तक माया का क्षेत्र है।** यानि अन्नमय कोश से विज्ञानयकोश तक माया का क्षेत्र है। इसके ऊपर के तीन लोक **सत्य लोक, अलखा लोक और अगम लोक** उस परम सत्ता (सत्+चित्+आनन्द) के लोक हैं। आज्ञाचक्र को भेदकर ऊपर उठते ही जीवात्मा माया के क्षेत्र से निकल कर आनन्दमय कोश में प्रवेश कर जाता है। इसके साथ ही गीता और वेद में वर्णित **अक्षय आन्तरिक दिव्य आनन्द** की अनुभूति मनुष्य को होने लगती है। **मेरे संत सद्गुरुदेव ने उस आनन्द को धरा पर अवतरित कर दिया है।** उन्हीं की कृपा से, मैं उसकी प्रत्यक्ष रूप में अनुभूति कर रहा हूँ। आध्यात्मिक दृष्टि से मुझसे जुड़ने वाले लोगों को भी इसकी प्रत्यक्षानुभूतियाँ हो रही है, जो कि भौतिक जगत् में सत्यापित हो रही हैं।

इस सम्बन्ध में ईसाइयों का पवित्र धार्मिक ग्रन्थ बाइबिल भी वही कहता है जो हमारे ग्रंथ कहते हैं। संसार की उत्पति के बारे में बाइबिल के संत जोहन 1: 1 से चार में कहा है :- ''आदि में शब्द था, और शब्द परमेश्वर के साथ था, और शब्द परमेश्वर था यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।

वेद और गीता में वर्णित अक्षय दिव्य आन्तरिक आनन्द के बारे में बाइबल में भजन संहिता 23 : 5 में कहा है:- **''यह एक आन्तरिक आनन्द है जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में आता है।** यह आनन्द हृदय में बना रहता है। सांसारिक आनन्द के समान यह आता-जाता नहीं है। उसका आनन्द पूर्ण है। वह हमारे हृदय के कटोरों को आनन्द से तब तक भरता है जब तक उमड़ न जाय। प्रभु का आनन्द जो हमारे हृदयों में बहता है, हमारे हृदयों से उमड़कर दूसरों तक बह सकता है।''

आज संसार से वह दिव्य आनन्द और दिव्य प्रकाश कहाँ चला गया। सभी धर्म जिस शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति मानते हैं, उसकी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार असम्भव क्यों हो गया है? संसार यथा स्थिति चल रहा है। चारों कोश तो उपलब्ध है परन्तु तीन कोश (सत्+चित+आनन्द) गुम हो चुके हैं। जब तक उनकी उपलब्धि आम मानव के लिए सुलभ नहीं हो जाती है, **विद्या पर अविद्या का अधिकार रहेगा।** भौतिक विज्ञान तामसिक वृत्तियों के अधीन रहकर उनके आदेश का पालन करेगा। जिस दिन भौतिक विज्ञान अपने जनक अध्यात्म विज्ञान के आदेश पर चलने लगेगा, महर्षि अरविन्द के शब्दों में **''धरा पर स्वर्ग उतर आवेगा।''**

हमारे सभी संतों ने हरिनाम की महिमा गाई है। भगवान् ने भी गीता में अपनी विभूतियों का वर्णन करते हुए 10 वें अध्याय के 25वें श्लोक में जपयज्ञ (नामजप) को सर्वोत्तम यज्ञ बताते हुए अपनी विभूति बताया हैं। बंगाल में जन्मे महान् आत्मा चैतन्य महाप्रभु, प्रभु जगद्बन्धु, रामकृष्ण परमहंस, तथा संत सद्गुरु नानक देव जी तथा संत कबीर आदि सभी संतों ने हरि नाम को ही मोक्ष का साधन बताया है। संत सद्गुरुदेव नानक देव जी ने नाम की महिमा गाते हुए कहा है:-

''भांग-धतूरा नानका,
उतर जाय परभात।
नाम खामारी नानका,
चढ़ी रहे दिन रात।।''

संत कबीर ने एक कदम और आगे बढ़कर हरिनाम की महिमा गाते हुए कहा है-

''नाम अमल उतरै न भाई।
और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरै
नाम अमल दिन बढे सवायो।''

जिस मयस् (दिव्य आनन्द) की बात वेद करता है, जिसका गुणगान बाइबल में है, जिस अक्षय आनन्द की बात भगवान् ने गीता में की है, जिस **नाम खुमारी और नाम अमल की**

www.the-comforter.org

बात सभी संतों ने की है, उसको प्राप्त करना ही आध्यात्मिक आराधना का उद्देश्य है। इसके अलावा सब आराधनाएँ त्रिगुणमयी माया के प्रभाव क्षेत्र की है।

स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने एक कदम और आगे बढ़कर कह डाला - **''अनुभूति-अनुभूति की यह महती शक्ति मय वाणी भारत के ही आध्यात्मिक गगन मण्डल से आविर्भूत हुई है। एक मात्र हमारा वैदिक धर्म ही है जो बारम्बार कहता है, ईश्वर के दर्शन करने होंगे, उसकी प्रत्यक्षानुभूति करनी होगी, तभी मुक्ति सम्भव हैं। तोते की तरह कुछ शब्द रट लेने से काम चल ही नहीं सकता है।''** स्वामी जी ने यह बात अनायास ही नहीं कही है। वे भविष्य दृष्टा थे। उन्हें बहुत अच्छी प्रकार ज्ञान था कि भारत आगे चलकर संसार में इन तथ्यों को सत्यापित करेगा। **संतों की वाणी निरर्थक नहीं होती है।** युग के गुणधर्म के कारण तामसिक वृत्तियों की प्रधानता होने से उस समय लोग उसे समझ नहीं पाते हैं। महर्षि अरविन्द ने इस सम्बन्ध में जो घोषणा की है, वह पहले के संतों की बातों को प्रमाणित करती है।

महर्षि अरविन्द ने उस परमतत्त्व को धरा पर अवतरित कराने के लिए अपने अमूल्य जीवन की आहुति दे डाली। **वे अपने जीवन में ही सफलता के सर्वोच्च शिखर पहुँच गये थे।** उस परमतत्त्व के धरा पर अवतरित होने के बारे में उन्होंने घोषणा की है -

''24 नवम्बर 1926 को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं है। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है, अधिमानसिक देव का अवतरण जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आनन्दमय है। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्बुद्ध करके विकास के मार्ग का समर्थन और संचालन करते हैं।''

उपर्युक्त भविष्यवाणी नहीं है। एक सच्चाई के अवतरित होने की घोषणा है। श्री अरविन्द के अनुसार वह परमसत्ता अपने क्रमिक विकास के साथ सारे संसार को आकर्षित करने लगेगी। मेरी प्रत्यक्षानुभूति के अनुसार वह सत्ता 1982 के प्रारम्भ से प्रकट

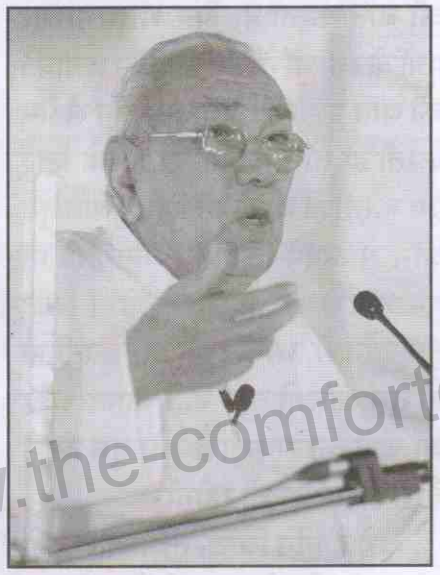

होना प्रारम्भ कर देगी। 1992 तक वह भारत में काफी फैल जायेगी और आगे के तीन वर्षों में पूरे संसार में फैल जावेगी।

क्योंकि अध्यात्म ज्ञान प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है, इसमें उपदेश या ग्रन्थ अधिक सहायक सिद्ध नहीं हो सकते। मुझे जो कुछ भी मिला उसमें उपदेश या ग्रन्थ का एक प्रतिशत भी सहयोग नहीं रहा है। **संत सद्गुरुदेव निराकार ब्रह्म के साकार स्वरूप होते हैं। उनकी कृपा के बिना इस जगत् (अध्यात्म जगत्) में प्रवेश असम्भव है।**

मुझे सन् 1967 से 1982 तक विभिन्न प्रकार की आराधनाएँ मजबूरी में फँसकर करनी पड़ी। आज तक जितनी आराधनाएँ, मैंने की और जो अब कर रहा हूँ, वह सब परिस्थितियों वश करनी पड़ रही हैं। प्रत्येक का नया परिणाम मिल रहा है।

ईश्वर कृपा और गुरुदेव के आशीर्वाद के कारण पग-पग पर दिशा निर्देश और पथ प्रदर्शन मिल रहा है।

मैं एक साधारण गृहस्थी प्राणी हूँ। मेरे माध्यम से यह सब होना, अपने आप में एक आश्चर्य और विचित्र बात है। मैं भी (रजोगुण से अत्यधिक प्रभावित प्राणी हूँ। आज भी वह वृत्ति मुझे रह रह कर अपनी तरफ आकर्षित करती है। परन्तु मैं अनुभव कर रहा हूँ कि कोई अदृश्य शक्ति मुझे एक कदम भी उस वृत्ति की तरफ नहीं बढ़ने दे रही है।

अतः मेरे माध्यम से जो शक्ति प्रकट हो रही है, उसमें मेरी बुद्धि से किया हुआ कुछ भी प्रयास नहीं हैं। इस सम्बन्ध में मुझे किसी प्रकार का भ्रम नहीं है। **जो कुछ हो रहा है, वह मेरे असंख्य गुरुओं की आराधना का फल है।**

मुझे मेरे परमदयालु संत सद्गुरुदेव की अहैतुकी कृपा के कारण यह सब अनायास ही प्राप्त हो गया। मैं तो मात्र गुरु कृपा का प्रसाद बाँटने संसार में अकेला ही निकल पड़ा हूँ। मैं अच्छी प्रकार जानता हूँ कि मैं कर्ता नही हूँ। इसलिए मुझे किसी प्रकार की निराशा भी नहीं होती। घाटे-नफे का अधिकारी तो वही जगत् सेठ है, मैं तो मात्र अपनी मजदूरी का अधिकारी हूँ।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
3.12.1988

www.the-comforter.org

दिव्य प्रेम

(अप्रैल १२, १६०० को सैन फ्रान्सिस्को क्षेत्र में दिया गया भाषण) विवेकानन्द साहित्य-भाग 3)

मुझे विश्वास है कि यदि कोई स्त्री और पुरुष वास्तव में प्रेम कर सकते हैं तो वे उन सब शक्तियों को प्राप्त कर सकते हैं, जिनका दावा योगी करते हैं, क्योंकि **'प्रेम स्वयं ईश्वर है।'** ईश्वर सर्वशक्ति-मान है और (इसलिए) तुमको वह प्रेम प्राप्त हो जाता है, चाहे तुमको उसका पता चले या न चले।

अभी उस संध्या मैंने एक लड़के को, एक लड़की की प्रतीक्षा करते देखा।... मैंने सोचा, इस लड़के का अध्ययन एक अच्छा प्रयोग होगा। उसमें उसके **प्रेम की गहनता** के कारण अदृश्य-दर्शन, अश्रव्य-श्रवण की शक्ति का विकास हो गया। साठ अथवा सत्तर बार उसने कभी गलती नहीं की, और वह लड़की दो सौ मील की दूरी पर थी। (वह कहता), ''उसने यह पहन रखा है'', (अथवा), ''वह जा रही है।'' मैंने यह बात अपनी आँखों से देखी है।

प्रश्न यह है, क्या तुम्हारा पति ईश्वर नहीं है, तुम्हारा बच्चा ईश्वर नहीं है? यदि तुम पत्नी से प्रेम कर सकते हो तो संसार का संपूर्ण धर्म तुम्हारे पास है। **धर्म और योग का सारा रहस्य तुम्हारे भीतर है।** पर क्या तुम प्रेम कर सकते हो? प्रश्न यह है। तुम कहते हो, **''मैं प्रेम करता हूँ...**ओ, मेरी, मैं तुम्हारे लिए मरता हूँ!''पर यदि (तुम) मेरी को किसी दूसरे पुरुष का चुम्बन लेते देखते हो तो तुम उस व्यक्ति का गला काटना चाहते हो। यदि मेरी, जॉन को किसी दूसरी लड़की से बात करते देख लेती है तो वह रात भर सो नहीं पाती और वह जॉन के जीवन को नरक बना देती है। यह प्रेम नहीं है। यह यौन लेन-देन और बिक्री है। इसको प्रेम का नाम देना अन्याय है। संसार दिन-रात ईश्वर और धर्म की-इसलिए प्रेम-की बात करता है।

प्रत्येक वस्तु का मजाक, यही है, जो तुम कर रहे हो! प्रत्येक मनुष्य प्रेम की बात करता है, फिर भी समाचार पत्रों के स्तम्भों में, हम प्रतिदिन तलाकों की बात पढ़ते हैं। जब तुम जॉन से प्रेम करती हो तो तुम जॉन से उसके लिए प्रेम करती हो या अपने लिए! यदि तुम जॉन से अपने लिए प्रेम करती हो तो तुम जॉन से कुछ आशा रखती हो। यदि तुम जॉन से उसके लिए प्रेम करती हो तो तुम जॉन से कुछ नहीं चाहतीं। वह जो चाहे कर सकता है और तुम उससे वैसा ही प्रेम करती रहोगी।

ये हैं तीन बिन्दु, तीन कोण, जो (प्रेम का) त्रिकोण बनाते हैं। जब तक प्रेम नहीं होता, ज्ञान सूखी हड्डियों जैसा रहता है, **योग एक प्रकार का (सिद्धांत) बन जाता है, और कर्म केवल श्रम मात्र रह जाता है।** (यदि प्रेम होता है) तो ज्ञान काव्य हो जाता है, योग (रहस्यवाद) बन जाता है और कर्म, सृष्टि में सबसे आनन्ददायक वस्तु हो जाता है। पुस्तकों को (केवल) पढ़ने से मनुष्य बाँझ हो जाता है। विद्वान् कौन बनता है? वह जो प्रेम की एक बूँद भी अनुभव कर पाता है। **ईश्वर, प्रेम है और प्रेम, ईश्वर है।** और ईश्वर सर्वव्यापी है। यह जानने के बाद कि ईश्वर प्रेम है और ईश्वर सर्वव्यापी है, मनुष्य यह नहीं जानता कि वह अपने सिर पर खड़ा है अथवा (अपने) पैरों पर-उस मनुष्य की भाँति, जिसे शराब की एक बोतल मिल जाती है और जो यह नहीं जानता कि वह कहाँ है?... यदि हम ईश्वर के लिए दस मिनट रोते हैं तो हमें दो महीने यह पता नहीं चलेगा कि हम कहाँ हैं।.. .हमें भोजन के समयों का ध्यान नहीं रहेगा। हमें पता नहीं चलेगा कि हम क्या खा रहे हैं?

तुम ईश्वर से प्रेम (कैसे कर सकते हो) और अपने व्यवहार को सदा ऐसा सुन्दर और चुस्त कैसे रख सकते हो?...वह... प्रेम की सर्व विजयिनी, सर्वसमर्थ शक्ति.. ..वह कैसे आ सकती है?... लोगों की परीक्षा मत लो।

वे सब पागल हैं। बच्चे (पागल) हैं-अपने खेलों के पीछे, जवान, जवान के पीछे, वृद्ध अपने अतीत के वर्षों की जुगाली कर रहे हैं); कुछ कांचन के लिए पागल हैं। कुछ ईश्वर के लिए क्यों नहीं? ईश्वर के प्रेम के लिए उसी प्रकार पागल हो जाओ, जैसे तुम जॉनों और जेनों के लिए होते हो। वे कौन हैं? (लोग) कहते हैं, क्या मैं इसे छोड़ दूँ, क्या मैं उसे छोड़ दूँ?'' एक ने पूछा, ''क्या मैं विवाह छोड़ दूँ?'' कुछ भी मत छोड़ो! वस्तुएँ ही तुम्हें छोड़ देंगी। प्रतीक्षा करो और तुम उनको भूल जाओ।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

21 वीं सदी का भारत

श्री अरविन्द ने जेल से छूटने के बाद प्रथम भाषण "धर्मरक्षिणी सभा" में उत्तरपाड़ा में दिया था। उसमें श्रीअरविन्द को भगवान् श्रीकृष्ण ने अलीपुर जेल में जो आदेश दिये थे उनका वर्णन करते हुए श्री अरविन्द कहते हैं — "मैं तुम्हें जिस काम के लिए जेल में लाया हूँ, अपने उस काम की ओर मुड़ो और जब तुम जेल से बाहर जाओ तो यह याद रखना — कभी डरना मत, कभी हिचकिचाना मत। याद रखो, यह सब मैं कर रहा हूँ तुम या और कोई नहीं। अतः चाहे जितने बादल घिरें, चाहे जितने खतरे और दुःख-कष्ट आयें, कठिनाइयाँ हों, चाहे जितनी असंभवताएँ आयें, कुछ भी असंभव नहीं है, कुछ भी कठिन नहीं है। मैं इस देश और इसके उत्थान में हूँ, मैं वासुदेव हूँ, मैं नारायण हूँ। जो कुछ मेरी इच्छा होगी वही होगा, दूसरों की इच्छा से नहीं। मैं जिस चीज को लाना चाहता हूँ, उसे कोई मानव-शक्ति नहीं रोक सकती।"

अलीपुर जेल में श्रीअरविन्द ने भगवान् श्रीकृष्ण से आदेश माँगते हुए कहा — "मुझे अपना आदेश दो, मैं नहीं जानता कि कौन-सा काम करूँ और कैसे करूँ। मुझे एक संदेश दो।" इस पर योगयुक्त अवस्था में श्री अरविन्द को दो आदेश मिले। पहला यह था — "मैंने तुम्हें एक काम सौंपा है और वह है "इस जाति के उत्थान में सहायता देना।" शीघ्र ही वह समय आयेगा, जब तुम्हें जेल से बाहर जाना होगा; क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तुम्हें सजा हो या तुम अपना समय औरों की तरह अपने देश के लिए कष्ट सहते हुए बिताओ। मैंने तुम्हें काम के लिए बुलाया है, और यही वह आदेश है, जो तुमने माँगा था। मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि जाओ और काम करो।"

दूसरा आदेश इस प्रकार था — "इस एक वर्ष के एकान्तवास में तुम्हें कुछ दिखाया गया है, वह चीज दिखाई गई है, जिसके बारे में तुम्हें संदेह था, वह है हिन्दू-धर्म का सत्य। इसी धर्म को मैं संसार के सामने ऊपर उठा रहा हूँ। यही वह धर्म है जिसे मैंने ऋषि-मुनियों और अवतारों के द्वारा विकसित किया और पूर्ण बनाया है, और अब यह धर्म अन्य जातियों में मेरा काम करने के लिए बढ़ रहा है।

क्रमशः अगले अंक में...

અદ્‌ભૂત સિદ્ધયોગ

સિદ્ધયોગ સાધનામાં પાળવાના નિયમો

(૧) સાધકે ગુરુદેવ સિયાગ પ્રતિ સંપુર્ણ શ્રદ્ધા અને સમર્પણ ભાવ રાખવો સાધકની શ્રદ્ધા અને સમર્પણ જેટલી વધારે હોય તેટલા જ પ્રમાણમાં એને સાધના સફળ થાય છે. જેમબેંક ખાતામાં જીટ્ટ્રૈહપ્ત્ર નું રોકાણ ઓછું હોય તો ઓછું વ્યાજ મળે અને વધારે રોકાણ હોય તો વધારે વ્યાજ મળે તેમશ્રદ્ધાના પ્રમાણમાં તેનું ફળ પ્રાપ્ત થાય છે. ગુરુ પર શ્રદ્ધા ના હોય તો કા તો ઓછી હોય તો મંત્રજાપ અને ધ્યાનની અસર જેવી જોઈએ તેવી થતી નથી.

(૨).ગુરુદેવ પાસેથી દીક્ષા લીધા પછી એનું ઈચ્છિત પરિણામમેળવવા માટે સંપુર્ણ શ્રદ્ધા, એકાગ્રતા અને ખંત સિદ્ધયોગ સાધના કરવી. આ સાધના દરમિયાન બીજા કોઈ સંત, ગુરુ, બાબા, ભુવા, તાંત્રિક, માંત્રિક કે ફકીરની પાછળ જવું નહી. પોતે સ્વીકારેલ ગુરુ પર અડીખમરહેવું અને તેની જ આરાધના કરવી. અલગ અલગ ગુરુઓ પાછળ પડવાથી શ્રદ્ધા વહેંચાઈ જાય છે. પરિણામે સાધકના હાથમાં કંઈ જ આવતું નથી. દા.ત. એક ડૉકટરનો અલાજ ચાલતો હોય ત્યારે આપણે બીજા ડૉકટરનો ઈલાજ કરતા નથી. કારણ બંનેની દવા અને ટ્રીટમેન્ટ મીક્ષ થાય તો બીમારી દુર થવાને બદલે વધુ વણસી જવાની શકયતા છે. એટલે એક જ ગુરુ પર શ્રદ્ધા રાખીને સાધના કરવી.

(૩).સિદ્ધયોગ સાધના એ ઈશ્વર પ્રાપ્તિનો સર્વોત્તમમાર્ગ છે. કારણ કે જે બ્રહ્માંડમાં જે તેત્રીસ કરોડ દેવી - દેવતા પૂજાય છે એવા દેવોના દેવ મહાશિવ પાસે સિદ્ધયોગ નો સંતો જાય છે. જેમઆપણને ઝડપી પ્રવાસ માટે હાઈવે મળી ગયો હોય તો આપણે નાના સંતાઓ અને ગલીઓમાં જતાં નથી. એ જ પ્રમાણે સિદ્ધયોગનો સંતો મળઅયા પછી નાના મોટા કર્મકાંડ, મંદિરોના આંટાફેરા અને યાત્રા ધામપ્રવાસ વગેરેની જરૂર રહેતી નથી. બીજા ગુરુઓ કે સંતો અને કર્મકાંડ કરતા લોકો પ્રતિ આદરભાવ જરૂર રાખવો પરંતુ સિદ્ધયોગનો માર્ગ છોડવો નહી.

(૪).સિદ્ધયોગ સાધના એટલે સાક્ષાત ઈશ્વરના અલૌકિક તેની સાધના છે.તેની સામે કોઈ પણ ભૂત-પ્રેત, વળગાડ કે જાદુટોનાની અસર થતી નથી. એથી જ ગુરુદેવ સિયાગના શિષ્યે કોઈ પણ પ્રકારના ધાગા, દોરા, તાવીજ કે યંત્રોના બંધનમાં ફસાવું નહી. આ પ્રકારની કાલા જાદુ અથવા તાંત્રિક, માંત્રિક પાસે જવાથી સિદ્ધયોગ સાધનામાં ખલેલ પડે છે અને સાધક ગંભીર પ્રકારની મુશ્કેલીનો સામનો કરવો પડે છે.

(૫).સિદ્ધયોગ સાધના કરતી વખતે કોઈ બીમારીના કારણે ડૉકટર કે વૈદ્યની દવા લેવી પડે તો જરૂર લેવી. પરંતુ દવાને વળગીના રહેવું. સાધક જેટલી શ્રદ્ધાથી ગુરુદેવને રોગમુક્તિ માટે પ્રાર્થના કરશે એટલા જ ઝડપથી એની બીમારી દવા લીધા વગર મટી ગયાનો અનુભવ તેને થશે. ડૉકટરોએ જે દર્દીઓને જીવતા રહેવાની આશા છોડી દે દીધી હોય આવા અસંખ્ય દર્દીઓ ગુરુદેવ સિયાગના શરણે આવ્યા પછી મૃત્યુના કાંઠેથી પાછા ફરી અને સાજા થઈને નોર્મલ જીવન જીવી રહ્યા છે.

(૬).ભારતીય ધર્મશાસ્ત્રના અનુસાર મનુષ્યના આત્મિક ઉધ્ધાર કરવાની જવાબદારી ઈશ્વરે જેના વાણીમાં સત્યતા હોય એવી ગુરુને સોંપી છે. એટલે જ જે સદ્‌ગુરુ જીવન અને આધ્યાત્મિક જ્ઞાનનું દાન કરે છે એને ઈશ્વર ગણીને પૂજવું.

(૭).ધર્મગ્રંથો પ્રમાણે ગુરુની કૃપા સંપુર્ણ પ્રમાણે પ્રાપ્ત કરવા માટે ગુરુદક્ષિણા આપવી જરૂરી છે. સાધકે યથા શક્તિ તન (શ્રમ), મન (જ્ઞાનનો પ્રચાર), ધન આપીને ગુરુની સેવા કરવી એ જ સાચી ગુરુદક્ષિણા કહેવાય. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે ગીતામાં કહ્યું છે તેમશિષ્ય ગુરુને આદર અને પ્રેમભાવથી જે કાંઈ ભેટ આપે ભલે એ ફુલ જેવી નાનામાં નાની વસ્તુ કેમન હોય એને જ ગુરુદક્ષિણા આપી એવું કહેવાય.

(૮).ગુરુકૃપાથી ભૌતિક લાભ જેવું કે ધન, સાંસારિક સુખ, પુત્ર પ્રાપ્તિ અથવા જમીન જાયદાદ મેળવ્યા બાદ સિદ્ધયોગ સાધના બંધ કરવી અને ગુરુદેવ પ્રતિ શ્રદ્ધા છોડી દેવી એ ઘણું જ અયોગ્ય કહેવાય.

આવું કરવાથી સાધકને મળેલ લાભ લાંબા સમય સુધી ટકતો નથી અને તે સંસારની અનેક મુશ્કેલીઓ પાછો ધકેલાય જાય છે. એટલે જ લાભ મેળવ્યા પછી પણ ગુરુદેવ ઉપર જીવનભર શ્રદ્ધા રાખવી જરૂરી છે.

સિદ્ધયોગ આરાધનામાં આડંબરની જરૂર નથી :

ગુરુદેવ સિયાગે બતાવેલી આરાધના ના વિશિષ્ટતા એ છે કે એમાં કોઈપણ જાતના આડંબરને સ્થાન નથી. આમાં વિશિષ્ટ પ્રકારના કપડા, ખાનપાન કે આસનની જરૂર હોતી નથી. સાધકને જે પહેરાવ ઠીક લાગે તે અને જે જગ્યા અનુકૂળ હોય તે જગ્યાએ સાધક ધ્યાન કરી શકે છે. પછી એ રૂમમાં હોય કે બહાર ખુલ્લામાં બેઠો હોય. ગુરુદેવના ઘણા શિષ્યો પ્રવાસ કરતી વખતે

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-**आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (**नाश**) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो? **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याददाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एंव साक्षात्कार।

www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

उद्देश्य

- समस्त विश्व के मानवों के कल्याण हेतु बिना किसी वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता एवं लिंग भेद के इस दिव्य अध्यात्म ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करना एवं समस्त विश्व में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र स्थापित करना।
- विश्व के समस्त धर्मों के विकारों एवं आडम्बरों से मानव मात्र को मुक्त करना एवं अध्यात्म के मूलभूत सार्वभौम सिद्धांत के अनुसार मन मंदिर में उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।
- विश्व भर में वैदिक दर्शन की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाकर भौतिक जगत् में विज्ञान की तरह उसे सत्य प्रमाणित करना।
- विश्व कल्याण हेतु संपूर्ण विश्व में वैदिक मनोविज्ञान(अध्यात्म विज्ञान) की शिक्षा हेतु प्रबन्ध करना तथा वहीं के लोगों को इस ज्ञान का प्रशिक्षण देने योग्य बनाना।
- विश्व के सकारात्मक स्त्री-पुरुषों को शक्तिपात-दीक्षा देकर चेतन करना तथा उन्हें अपने ही देश में इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार का अधिकार देकर मानव शान्ति का पथ प्रशस्त करना।
- सिद्धयोग में वर्णित शक्तिपात दीक्षा द्वारा मानवीय गुणों में परिवर्तन लाया जाकर तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सतोगुण, सतोगुण से त्रिगुणातीत जाति में बदलकर उस परम तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

www.the-comforter.org

समस्याओं का हल होना संभव है। 'मनुष्य, ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है', उसमें असीम ज्ञान और विज्ञान का अद्भुत भण्डार भरा पड़ा है। गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना द्वारा अपने भीतर की चेतना को जाग्रत कर, उसका सदुपयोग लिया जाना संभव है।

मनुष्य, जीवन की सभी समस्याओं, रोगों तथा नशों से मुक्त होता हुआ, अपने असली स्वरूप अर्थात् ईश्वर के तद्रूप कैसे हो सकता है? गुरुदेव सियाग सिद्धयोग में, 'मनुष्य शरीर रूपी सुन्दर ग्रन्थ को पढ़ने का एक दिव्य विज्ञान है, एक सहज और सरल तरीका है-''सघन मंत्र-जप और नियमित ध्यान।''

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र जप के साथ, इनकी तस्वीर से 15 मिनट ध्यान करके देखें!

सद्गुरुदेव सियाग की तस्वीर से ही क्यों लगता है-ध्यान? इस सत्य को जानने के लिए, ध्यान करके देखें!

सद्गुरुदेव सियाग को सगुण साकार और निर्गुण निराकार की दोनों सिद्धियाँ हो गई, इसी कारण से इनकी तस्वीर से ध्यान लगता है और सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान होता है। महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार-''किसी व्यक्ति को ये दोनों सिद्धियाँ यदि एक ही जीवन में, एक ही आदमी में हो जाए तो मानव मात्र का कल्याण हो जाएगा।'' यही कारण है कि पूरी दुनिया के हर कोने में सद्गुरुदेव सियाग की तस्वीर से ध्यान लगता है और अद्भुत योग स्वतः ही होता है।

सम्पूर्ण मानव जाति को सिद्धयोग दर्शन से लाभान्वित करने हेतु, समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने अपने कर कमलों से-गुरुवार, 25 दिसम्बर 1997, क्रिसमिश के दिन अपनी वेबसाइट (www.the-comforter.org) की शुरूआत की थी। इस वेबसाइट में सद्गुरुदेव सियाग के मिशन की संपूर्ण जानकारी उपलब्ध है।

सद्गुरुदेव सियाग ने अपने मिशन का एक संदेश, 25 अगस्त 2003 को अपनी दिव्य लेखनी से लिखकर, भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री वी एन खरे को दिया था जिसमें उन्होंने संस्था की वेबसाइट और सिद्धयोग दर्शन का उल्लेख किया था जो उनके ही शब्दों में लिख रहा हूँ-''मेरी संस्था की वेबसाइट (www.the-comforter.org) में पूर्ण जानकारी उपलब्ध है। इस वेबसाइट से मेरी तस्वीर लेकर, सम्पूर्ण विश्व के ''एड्स'' रोगी, उसका ध्यान अपने आज्ञाचक्र पर करें तो क्या होगा? ईश्वर ही जाने!

भारतीय योग दर्शन में वर्णित इस ''सिद्धयोग'' से विश्व शांति के रास्ते की सभी रूकावटों का समाधान संभव है।''

सद्गुरुदेव सियाग ने पूरी दुनिया को एकता के सूत्र में बाँधने और विश्व शांति की पताका फहराने के लिए एक संजीवनी मंत्र, एक संविधान, एक नीला झण्डा और एक ट्रस्ट का गठन किया।

भौतिक जीवन में रहते हुए सद्गुरुदेव सियाग ने नीले झण्डे के नीचे और अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के बेनर तले देश-विदेश में लाखों लोगों को, नाथ योगियों का अमर ज्ञान अर्थात् शक्तिपात दीक्षा दी। उनके द्वारा इस भूमण्डल पर स्थापति मिशन का, उनकी हर आज्ञा और आदेश का पालन करना, प्रत्येक शिष्य का कर्तव्य है।

सद्गुरु आज्ञा ही सर्वोपरि
सद्गुरु आज्ञा ही सर्वोपरि
सद्गुरु आज्ञा ही सर्वोपरि

-सम्पादक

''हमारे लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है-''धर्म'' और ये सब चीजें और इसके अतिरिक्त और बहुत कुछ हमारे धर्म की परिभाषा में आते हैं। जीवन के कुछ महान् नियम हैं। मानव-विकास का एक सिद्धांत है और अध्यात्म विद्या का एक भण्डार है।

ये सब तत्त्व हमारे ''सनातन धर्म'' के अंदर आ जाते हैं। इसकी रक्षा करना, इसका प्रसार करना और इसका मूर्तिमन्त उदाहरण बनना भारत का कर्तव्य है।''

-महर्षि श्री अरविन्द

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

▶ ध्यान की विधि ◀

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

▶ Method of Meditation ◀

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

कोटा आश्रम–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का 93वाँ अवतरण दिवस श्रद्धा पूर्वक मनाया गया। (24 नवम्बर 2018)

www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

AVSK जोधपुर द्वारा दर्जनों विद्यालयों व प्रत्येक रविवार को हमराह कार्यक्रमों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। जोधपुर व बाड़मेर के मण्डोर, लूणी, बालोतरा, कल्याणपुर आदि कस्बों में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (नवम्बर 2018)

www.the-comforter.org

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें
Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् _____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी